साक्षात् परिचय—ज्ञान तथा विवरणात्मक ज्ञान
(Knowledge by Acquaintance and Knowledge by Description)

(क) विषय-प्रवेश

साक्षात् परिचय-ज्ञान तथा विवरणात्मक ज्ञान के अन्तर को रसेल ने प्रायः सदा मान्यता दी है, तथा इनका प्रसंगानुसार उपयोग भी किया है। 'विवरण' तो उनके तार्किक ढंगों (Logical Tools) में एक है किन्तु, हम यहाँ 'विवरण' (Description) की तार्किक उपयोगिता को स्पष्ट नहीं करेंगे—वह आगे होगा। यहाँ हम 'परिचय-ज्ञान, (acquaintance) तथा विवरणात्मक ज्ञान (Knowledge by Description) के स्वरूप को स्पष्ट करेंगे तथा उसी संदर्भ में उनके भेद, एवं सहयोग को-भी स्पष्ट करेंगे।

Scanned with CamScanner

सामान्यतः हमें दो प्रकार के ज्ञान उपलब्ध होते हैं—'सत्यों का ज्ञान' (Knowledge of Truths) तथा 'वस्तुओं का ज्ञान' (Knowledga of Things)। परिचयात्मक एवं विवरणात्मक ज्ञान का संबंध सत्यों के ज्ञान से नहीं है। कहा जा सकता है कि वस्तुओं का ज्ञान दो प्रकार से संभव होता है, एक साक्षात् परिचय द्वारा दूसरा विवरण द्वारा। परिचय के द्वारा प्राप्त ज्ञान-सत्यों के ज्ञान से सरल होता है, तथा उस पर निर्भर नहीं करता। हमें किसी वस्तु से परिचय हो सकता है बिना उस वस्तु के संबंध में किसी सत्य के ज्ञान के। किन्तु, विवरण के द्वारा प्राप्त ज्ञान में प्रायः सदा सत्यों के ज्ञान की प्रासंगिकता होती है। जैसा कि हम देखेंगे, किसी वस्तु का विवरणात्मक ज्ञान में उस वस्तु के विषय में कुछ सत्यों की जानकारी अनिवार्य प्रतीत होती है। फिर भी, यह तो कहा ही जा सकता है कि **परिचय** तथा **विवरण वस्तुओं** के संबंध में ही ज्ञान पाने के दो ढंग हैं। पहले हम दोनों में एक प्रारम्भिक भेद दिखा लें और उसके बाद दोनों की अलग-अलग विवेचना करें।

(ख) दोनों में एक प्रारम्भिक भेद

दोनों प्रकार से प्राप्त ज्ञान के विशद विवरण प्रस्तुत करने के पहले दोनों में एक प्रारम्भिक भेद कर लेना अनिवार्य है। इन दोनों के सामान्य भेद की एक प्रारम्भिक समझ के आधार पर ही दोनों के स्वरूप की पृथक्-पृथक् विवेचना वांछनीय है। इस भेद को स्पष्ट करने के लिए एक साधारण प्रत्यक्ष का उदाहरण लें। मान लें हम एक 'मेज' देख रहे हैं। इसे देखने में ऐसे कौन-से तत्त्व हैं जिसकी साक्षात् प्रतीति हो रही है। यहाँ साक्षात् प्रतीति का अर्थ ऐसी अवगति से है जो बिना किसी माध्यम के प्राप्त हो, और न तो वह प्रतीति किन्हीं पूर्वज्ञात सत्यों पर आधारित हो। इस अर्थ में हमें '**मेज**' की साक्षात् प्रतीति नहीं होती क्योंकि हमारी प्रत्यक्ष-संबंधी संवेदना में 'मेज' को देखने की क्षमता निहित नहीं है। अतः हमें बिना किसी माध्यम के साक्षात् प्रतीति हो रही है, रंग के एक धब्बे की, एक आकार की, एक रूप की आदि। यदि हम मेज का स्पर्श करें तो '**मेज**' की साक्षात् प्रतीति नहीं होती, बल्कि एक कड़ापन की साक्षात् प्रतीति होती है। रंग का धब्बा, आकार, रूप, कड़ापन, आदि 'इन्द्रिय-प्रदत्त' (Sense Data) कहे गये हैं। अतः 'मेज' के प्रयत्न में इन इन्द्रिय-प्रदत्तों' की साक्षात् प्रतीति हो रही है।

यही ठीक है कि इन प्रदत्तों के विषय में बहुत-कुछ कहा जाता है। जैसे कहा जा सकता है कि जो रंग हमने देखा वह हरा है, अथवा जो आकार हमने देखा वह चतुर्भुजाकार है। किन्तु इस तरह की सभी उक्तियाँ उन प्रदत्तों **के विषय** में भले हो, उन उक्तियों के आधार पर रंग या आकार की साक्षात् प्रतीति नहीं होती। बल्कि जब हमें रंग या आकार की साक्षात् प्रतीति होती है तो हमें उस रंग या आकार की अवगति हो जाती है, उसकी जानकारी प्राप्त हो जाती है। वह जानकारी किसी रूप में भी रंग या आकार के विषय में कही गयी इन उक्तियों पर आधारित नहीं है। रंग या आकार की जानकारी साक्षात् एवं तात्कालिक होती है। अतः कहा जा सकता है कि 'मेज' के प्रत्यक्ष में जिन इन्द्रिय-प्रदत्तों की साक्षात् प्रतीति होती है, उनके विषय में कहा जा सकता है कि उनका **ज्ञान साक्षात् परिचय, ज्ञान** (Knowledge by Acquantance) है।

किन्तु, ध्यान से देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मेज के प्रत्यक्ष में जो मेज का ज्ञान प्राप्त होता है वह साक्षात् ज्ञान नहीं है। मेज का साक्षात् ज्ञान नहीं होता इसे अनेक प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है। ऐसी कोई मानसिक स्थिति का निर्देश नहीं किया जा

Scanned with CamScanner

सकता जिसमें मेज का साक्षात् ज्ञान होता है। वस्तुतः जिसका साक्षात् ज्ञान होता है उस पर संशय नहीं किया जा सकता। जो साक्षात् प्रतीति में ग्राह्य है वह संशय से परे हैं। किन्तु, अनेकों ढंग हैं जिससे तर्कतः 'मेज' पर 'मेज' है की संभावना पर संशय किया जा सकता है। इससे भी यह स्पष्ट होता है कि मेज का साक्षात् ज्ञान नहीं होता। रसेल के अनुसार वस्तुतः 'मेज' का ज्ञान अथवा 'भौतिक वस्तु' (Physical Objects) का ज्ञान विवरणात्मक ज्ञान (Knowledge by Description) कहा जा सकता है, क्योंकि यह ज्ञान कुछ विवरणों के माध्यम से ही प्राप्त होता है। 'मेज' एक ऐसी वस्तु है जिसका ज्ञान उसके प्रत्यक्ष में प्रदत्त इन्द्रिय-प्रदत्तों के माध्यम से होता है। मेज का ज्ञान इन्द्रिय-प्रदत्तों के अनुरूप **विवरणों** पर निर्भर है। मेज के विषय में किसी ज्ञान के लिए हमें मेज के सम्बन्ध में कुछ ऐसे सत्यों की जानकारी अनिवार्य है, जो सत्य उन तत्त्वों पर निर्भर है जिनका हमें परिचय-ज्ञान प्राप्त है। वस्तुतः मेज के संबंध में हमारे सभी ज्ञान सत्यों के ज्ञान हैं—सभी एक विवरण (Description) हैं, तथा हम यह भी मानकर चलते हैं कि एक ऐसी वस्तु है जिस पर यह विवरण लगता है। उस वस्तु को हम साक्षात ढंग से नहीं जानते, 'वस्तु' का परिचय-ज्ञान नहीं होता। वस्तु के विषय में हमारा ज्ञान विवरणों पर आधारित है। इस अर्थ में वस्तु का ज्ञान विवरणात्मक ज्ञान है।

इस प्रकार दोनों का एक प्रारम्भिक भेद स्पष्ट होता है। इस स्पष्टीकरण में 'मेज' अथवा 'भौतिक वस्तु' तथा 'इन्द्रिय-प्रदत्त' का उदहारण लिया गया है। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि केवल इन्द्रिय-प्रदत्तों का ज्ञान परिचय-ज्ञान है तथा केवल भौतिक-वस्तुओं का ज्ञान विवरणात्मक ज्ञान है। नहीं। यह उदाहरण दोनों के भेद को स्पष्ट करने के लिए सुविधाजनक है, किन्तु इन उदाहरणों से इन दोनों प्रकार के ज्ञान की सीमाएँ निर्धारित नहीं होतीं। अतः अब यह आवश्यक हो जाता है कि दोनों का स्वरूप स्पष्ट किया जाय।

(ग) साक्षात् परिचय-ज्ञान *(Knowledge by acquaintance)*

(i) परिचय ज्ञान क्या है?—रसेल 'परिचय-ज्ञान' को परिभाषित तो नहीं करते, किन्तु उसका बड़ा ही विशिष्ट विवरण देते हैं। रसेल के अनुसार यह ज्ञान बड़ा ही सरल ज्ञान है, क्योंकि यह बिना किसी माध्यम के बिना किसी अन्य उपकरण के सहारा के तात्कालिक प्राप्त होता है। इसी कारण रसेल कहते हैं कि यह ऐसा ज्ञान है जिसको हमें साक्षात् प्रतीति होती है (of which we are directly aware)। एक प्रकार से रसेल के अनुसार विवरण ज्ञान का परिभाषा जैसा विवरण यह है—हमें साक्षात् परिचय-ज्ञान तब होता है जब 'हमारा किसी वस्तु से **साक्षात् ज्ञानात्मक संबंध** होता है (when I have a direct cognitive relation to an object)। ज्ञानात्मक संबंध का अर्थ है कि विषयी और विषय में जो संबंध स्थापित होता है, उसमें विषय की कुछ अवगति होती है। **साक्षात्** का एक स्पष्ट अर्थ तो यह है कि यह अवगति तात्कालिक तथा बिना किसी माध्यम के है। इसके अतिरिक्त 'साक्षात्' शब्द में एक और अर्थ निहित है। यह साक्षात् संबंध इस कारण है कि यह संबंध ऐसा नहीं है कि उस संबंध के आधार पर निर्णयों (judgement) का निर्माण हो, बल्कि यह एक ऐसा संबंध है जिसमें एक प्रकार से विषय की **प्रदत्तता** (Presentation) है। सामान्यतः जब हम कहते हैं कि विषयी 's' को विषय 'o' का साक्षात् परिचय ज्ञान है, तो इस कथन का विपरीत कथन है कि विषय o विषयी s को प्रदत्त

Scanned with CamScanner

हुआ है। अर्थात् **सामान्यतः** जब परिचय ज्ञान होता है, तो इसका अर्थ है कि कोई विषय साक्षात् ढंग से विषयी के सामने प्रकट होता है—एक प्रकार से प्रदत्त होता है।

किन्तु, यहाँ एक स्पष्टीकरण अनिवार्य है। 'परिचय-ज्ञान' तथा प्रदत्तता सर्वथा एक नहीं है। रसेल ऐसा नहीं मानते कि हर परिचय-ज्ञान में बाहर से कुछ प्रदत्त होता है। नहीं, कुछ ऐसे भी उदाहरण हो सकते हैं कि जहाँ हमें परिचय-ज्ञान हो किन्तु बाहर से कुछ प्रदत्त नहीं हुआ हो। उदाहरणतः एकाएक कोई स्मृति उभर आती है, वह भी परिचय-ज्ञान है, किन्तु वहाँ कुछ बाहर से प्रदत्त नहीं हुआ है। यह ठीक है कि रसेल किसी-न-किसी रूप में विषयी (Subject) एवं विषय (Object) के द्वैत को स्वीकार कर अग्रसर होते हैं, किन्तु, परिचय के संदर्भ में प्रदत्तता का उल्लेख करने से उनका यह तात्पर्य नहीं कि दोनों अनिवार्यतः एक हैं। उनका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि परिचय-ज्ञान में हमें किसी विषय की साक्षात् अवगति होती है, वह विषय साक्षात् रूप में विषयों की अवगति में उजागर होता है, प्रगट होता है। बाहर से कुछ प्रदत्त हो ही, यह अनिवार्य नहीं है। इन्द्रिय-प्रदत्तों के ऊपर दिये उदाहरण से भी ऐसी भ्रान्ति उत्पन्न हो सकती है। इन्द्रिय-प्रदत्तों का साक्षात् परिचय-ज्ञान होता है, वह परिचय-ज्ञान का सबसे सामान्य उदाहरण है, तथा यहाँ कुछ प्रदत्त होता है। किन्तु, इन्द्रिय-प्रदत्तों के अतिरिक्त अन्य मुछ तत्त्व भी हैं जिनका परिचय ज्ञान होता है। अतः उस धारणा पर उस अर्थ में प्रदत्तता को परिचय-ज्ञान का अनिवार्य लक्षण मानना उपर्युक्त नहीं है। तब यह अवश्य है कि रसेल के अनुसार परिचय-ज्ञान में कुछ तत्काल—साक्षात्-रूप में उजागर होता है।

परिचय-ज्ञान के स्वरूप के सम्बन्ध में एक और स्पष्टीकरण अनिवार्य है। 'परिचय-ज्ञान' 'सत्यों के ज्ञान' से केवल सरल ही नहीं, किसी भी सत्य के ज्ञान पर किसी प्रकार निर्भर नहीं है, उससे तर्कतः स्वतंत्र है। इसका अर्थ है कि परिचय-ज्ञान के लिए किसी सत्य की पूर्व जानकारी अनिवार्य नहीं है। किन्तु, इससे यह नहीं समझना चाहिए कि जब हमें परिचय-ज्ञान होता है, तो उस विषय के सम्बन्ध में हमें किसी सत्य की जानकारी नहीं। ऐसा संभव है कि किसी विषय के संबंध में हमें अनेक सत्यों की जानकारी हो, किन्तु उसका परिचय न हो, तथा उसका परिचय-ज्ञान बाद में हो। रसेल के कहने का तात्पर्य मात्र इतना ही है कि हमारा साक्षात् परिचय-ज्ञान किसी प्रकार सत्यों के ज्ञान पर निर्भर नहीं है।

(ii) किन विषयों का साक्षात् परिचय-ज्ञान होता है?—साक्षात् परिचय-ज्ञान का स्वरूप पूर्णतया स्पष्ट करने के लिए यह जानना अनिवार्य है कि किन-किन विषयों का ज्ञान परिचय से प्राप्त होता है। वस्तुतः रसेल ने स्वयं यह बताया है कि वे तत्त्व क्या हैं जिनका ज्ञान हमें परिचय से प्राप्त होता है। हम अब उन उदाहरणों को स्पष्ट करेंगे।

(क) सर्वप्रथम तो यह कहा ही जा सकता है कि इन्द्रिय-प्रदत्त सबसे सामान्य उदाहरण हैं ऐसे तत्त्वों के जिनका ज्ञान परिचय से होता है। परिचय से ज्ञात विषयों में इन्द्रिय-प्रदत्त सबसे प्रमुख तथा सबसे सामान्य उदाहरण है। यह परिचय-ज्ञान का सबसे **स्पष्ट** उदाहरण भी है, जिसके फलस्वरूप कुछ विचारक तो इन्हें ही परिचय-ज्ञान का एकमात्र उदाहरण मान लेते हैं, क्योंकि जब भी उसके उदाहरण की माँग होती है तो लोग प्रायः सदा ही इन्द्रिय-प्रदत्तों का ही उदाहरण देते हैं। किन्तु, रसेल कहते हैं कि ऐसा करना परिचय-ज्ञान की सीमा को आवश्यकता से अधिक सीमित कर देना है। एक तो यह सीमा इस कारण हो जाती है कि उस अवस्था में तो परिचय-ज्ञान बस वर्तमान क्षण तक सीमित हो जाता। इतना ही नहीं, यदि यह कहा जाय कि केवल इन्द्रिय-प्रदत्तों का ज्ञान परिचय-ज्ञान है, तो इन्द्रिय-

Scanned with CamScanner

प्रदत्तों के विषय में किसी सत्य का ज्ञान भी नहीं हो पायेगा, क्योंकि, जैसा कि हम देखेंगे, सत्यों के ज्ञान के लिए ऐसे तत्त्वों परिचय-ज्ञान की आवश्यकता होती है जो इन्द्रिय-प्रदत्तों से सर्वथा भिन्न हैं। सत्यों का ज्ञान परिचय-ज्ञान पर एक प्रकार से निर्भर होता है, तथा जिनका वहाँ परिचय-ज्ञान होता है, वे **सामान्य** (Universals) होते हैं। अतः रसेल का कहना है कि जिनका हमें परिचय-ज्ञान होता है, उनका सबसे स्पष्ट उदाहरण तो इन्द्रिय-प्रदत्त अवश्य है, किन्तु ऐसे अन्य तत्त्व और हैं जिनका ज्ञान परिचय से प्राप्त होता है।

(ख) रसेल के अनुसार इन्द्रिय-प्रदत्त के परे जो ज्ञान परिचय से प्राप्त होता है उसमें सर्वप्रथम वैसे ज्ञान आते हैं जिनका परिचय-ज्ञान **स्मृति** (memory) के द्वारा होता है यह तो सर्वविदित है कि भूत में देखी हुई बातों को हम स्मरण करते ही हैं। ऐसी बातें जिन्हें पहले कभी इन्द्रियों ने पकड़ा था, कभी-कभी वर्तमान में उपस्थित हो जाती हैं, जिन्हें हम स्मृति कहते हैं। इस स्मृति में जो भी उपस्थित होता है उसका हमें **साक्षात्** ज्ञान होता है, क्योंकि स्मृति भी किसी माध्यम या किसी अनुमान पर आधृत नहीं है। यहाँ विषय है 'भूत में देखी गयी या सुनी गयी वस्तु।' इस विषय की वर्तमान में जो साक्षात् अवगति होती है वही स्मृति है। यही एकमात्र ढंग है जिससे भूत का ज्ञान संभव है।

(ग) परिचय-ज्ञान का तीसरा उदाहरण वह ज्ञान है जो **अन्तर्निरीक्षण** (Introspection) के द्वारा प्राप्त होता है। यहाँ रसेल **'अन्तर्निरीक्षण'** शब्द का एक विशिष्ट प्रयोग करते हैं। उनका यह अंतर्निरीक्षण मनोवैज्ञानिक 'अन्तनिरीक्षण' जैसा होते हुए भी उससे भिन्न है। रसेल कहते हैं कि जब हमें किसी वस्तु की अवगति होती है, तो यह भी अवगति होती है कि मुझे उस वस्तु की अवगति है। उदाहरणः अभी मैं इस कलम को देख रहा हूँ। 'कलम' के साथ 'कलम को देखने' की भी अवगति हो रही है। यह 'कलम को देखने की अवगति' परिचय-ज्ञान है क्योंकि यहाँ भी साक्षात् ज्ञान हो रहा है। मुझे 'दर्द' होता है, या 'सुख' मिलता है, या 'भूख' लगती है। यहाँ दर्द, सुख, भूख के साथ इस तथ्य का भी साक्षात् परिचय प्राप्त होता है कि 'मूझे दर्द है, 'मुझे सुख है' 'मुझे भूख है।'

रसेल का कहना है कि उसी प्रकार के परिचयात्मक ज्ञान से हमें सभी मानसिक तत्त्वों का ज्ञान होता है। रसेल के अनुसार इस प्रकार के परिचयात्मक ज्ञान का 'आत्म-चेतना'Self-consicousness) भी कहा जा सकता है। रसेल के अनुसार इस प्रकार के ज्ञान का एक विशेष महत्त्व है। इसी के द्वारा व्यक्ति को अपने मानसिक विषय-वस्तुओं का ज्ञान होता है, तथा इसी ज्ञान के आधार पर हम यह भी अनुमानतः जान पाते हैं कि मेरे मन के अतिरिक्त अन्य मन भी है। यदि यह आत्म-चेतना नहीं होती, तो अन्य मन के ज्ञान का कोई आधार भी नहीं आता। 'आत्म-चेतना' का महत्त्व इस बात में भी है कि इसी ज्ञान के आधार पर मानव अवगति तथा अन्य जीवों की जो अवगति होती है, उसमें भेद भी किया जा सकता है। यह कहने में कोई दोष नहीं है कि अन्य जीवों की भी रंग, आकार जैसे इन्द्रिय-प्रदत्तों का साक्षात् परिचय-ज्ञान होता है, किन्तु, यह कहने का कोई आधार उपलब्ध नहीं है कि उन्हें आत्म-चेतना होती है। मानव में तो यह साक्षात् परिचय-ज्ञान है।

(घ) ऊपर बताया गया कि एक प्रकार की आत्म-चेतना भी साक्षात् परिचय-ज्ञान है। तो रसेल के समक्ष एक प्रश्न उभरता है कि क्या इसका अर्थ यह है कि हमें 'आत्म' का भी परिचयात्मक ज्ञान मिलता है? क्या 'आत्म-चेतना' 'आत्मा की चेतना' है? रसेल कहते हैं कि इस प्रश्न का पूर्णतया निश्चित उत्तर देना बौद्धिक नहीं है। अतः वे इस समस्या में निहित सूक्ष्मताओं को परखते हुए इसका उत्तर देते हैं। ह्यूम के विचारों में उन्हें यह तथ्य

Scanned with CamScanner

दिखाई देता है कि सामान्यतः जब भी हम अपने अंतर में झाँकते हैं तथा आत्म को जानने की चेष्टा करते हैं, तो हमें किसी विशेष 'भावना' या किसी विशेष भाव-विचार की ही अवगति होती है। फिर भी, रसेल कहते हैं कि यदि इस अवगति की गहरायी में जाया जाय तो यह मानना पड़ता है कि किसी-न-किसी रूप में यहाँ एक **'मैं'** या **'अहं'** की अनुभूति होती है। यह 'मैं' किसी तात्त्विक आत्म के रूप में ज्ञात नहीं होता, किन्तु 'मै' जैसा-कुछ ज्ञात होता प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि इस 'मैं' के ज्ञान के बिना कोई अवगति संभव नहीं है। इसे रसेल मूलतः दो प्रकार से सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं।

प्रथमतः तो रसेल एक सामान्य परिचयात्मक ज्ञान के उदाहरण से इसे स्पष्ट करने की चेष्टा करते हैं। इस उदाहरण के विश्लेषण के आधार पर रसेल 'मैं' की अवगति की संभावना स्पष्ट करते हैं। रसेल यह उदाहरण लेते हैं, हमें आत्म-चेतनात्मक परिचय-ज्ञान है कि मैं सूर्य को देख रहा हूँ। इसके विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हमें यहाँ दो सम्बन्धित वस्तुओं की अवगति हो रही है। एक तो वे इन्द्रिय-प्रदत्त हैं जो 'सूर्य' को सूचित करते हैं, तथा दूसरी ओर वह है जो 'इन्द्रिय-प्रदत्त' को देख रहा है। अतः इस प्रकार का आत्म-चेतनात्मक परिचय-ज्ञान इन दोनों—जो देख रहा है तथा इन्द्रिय-प्रदत्त—के सम्बन्ध का ज्ञान है। अतः यहाँ जिस तथ्य का परिचयात्मक ज्ञान प्राप्त हा रहा है, वह तथ्य है **'इन्द्रिय-प्रदत्त से परिचित आत्म'** (Self-acquainted with sense datum)। अर्थात् यहाँ किसी 'आत्म' या 'मैं' की अवगति हो रही है—वह 'मैं' जिसे इन्द्रिय-प्रदत्तों का परिचय मिल रहा है।

पुनः रसेल कहते हैं कि वस्तुतः बिना इस 'मैं' या 'अहं' को स्वीकारे इन्द्रिय-प्रदत्तों का परिचय-ज्ञान स्पष्ट भी नहीं हो सकता। यदि इन्द्रिय-प्रदत्त के परिचय-ज्ञान को एक ज्ञात सत्य के रूप में व्यक्त किया जाय, तो कहना पड़ेगा कि 'हमें इन्द्रिय-प्रदत्त का परिचय-ज्ञान है।' बिना 'हमें' को समझे इस कथन का अवबोध भी सम्बन्ध नहीं। यह ठीक है कि इस 'हमें' से किसी शाश्वत सत्ता अथवा तात्त्विक आत्म का बोध नहीं होता; किन्तु, सामान्य ज्ञान के अनुरूप एक मैं को मानना ही पड़ता है। अतः रसेल का कहना है कि किसी-न-किसी रूप में हमें 'मैं' के रूप में आत्म का परिचयात्मक ज्ञान प्राप्त होता है। इस आत्म का स्वरूप स्पष्ट नही किया जा सकता। किन्तु, इसे माने बिना सभी परिचय-ज्ञान निराधार हो जाते हैं। रसेल स्वीकारते हैं कि हमारे पास ऐसे साक्ष्य या प्रामाण्य नहीं हैं कि जिसके बल पर हम **निश्चित** रूप से ऐसा कह सकें, किन्तु हम इतना तो कह ही सकते हैं कि **सम्भवतः** हमें किसी मैं-रूप-आत्म का साक्षात् परिचय-ज्ञान होता है। यह वह 'मैं' है जिसे वस्तुओं की अवगति होती है।

(ङ) अभी तक जितने भी उदाहरण लिए गये हैं, वे सभी विशेषों (Particulars) के उदाहरण हैं। रसेल का कहना है कि हमें सामान्यों (universals) का ज्ञान भी परिचय से होता है। विशेषतः ऐसे सामान्य जिन्हें हम सामान्य भाव (general idea) की संज्ञा देते हैं, जैसे सफेदी, इमानदारी, विभिन्नता आदि, इनका ज्ञान भी साक्षात् परिचय से होता है। वस्तुतः हर पूरे वाक्य में एक सामान्य रहता ही है, क्योंकि रसेल के मत में सभी क्रियाएँ (Verbs) ऐसे ही अर्थों को सूचित करती है जो सामान्य हैं। जब हम भाषा में व्यवहृत सामान्य शब्दों की परीक्षा करते हैं, तो पाते हैं कि सामान्य रूप में व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ तो विशेष को ही सूचित करते हैं, जबकि गुण, क्रिया आदि सामान्यों को सूचित करते हैं। **यहाँ सामान्य का अर्थ विशेष की पृष्ठभूमि में समझा जा सकता है। जो कई**

Scanned with CamScanner

विशेषों में समान हो वह सामान्य है। कोई सफेद वस्तु विशेष है, किन्तु, सफेदी जो कई विशेष वस्तुओं में रह सकती है, सामान्य है। रसेल का कहना है कि ऐसे सामान्यों का भी परिचयात्मक ज्ञान संभव है। ऐसे सामान्य भाव जिनका साक्षात् परिचय-ज्ञान प्राप्त होता है, उसे रसेल **संप्रत्यय** (concept) कहते हैं और संप्रत्ययों की जो साक्षात् प्रतीति होती है उसे **संप्रत्ययन** (conceiving) कहा जा सकता है। रसेल का उद्देश्य इस तथ्य पर जोर देना है कि साक्षात् परिचय-ज्ञान केवल विशेषों का नहीं, सामान्यों का भी होता है।

(घ) विवरणात्मक ज्ञान *(Knowledge by Description)*

इसके पहले कि हम विवरणात्मक ज्ञान का स्वरूप निर्धारित करने की चेष्टा करें, एक स्पष्टीकरण अनिवार्य हो जाता है। विवरण (Description) रसेल के ज्ञानमीमांसीय एवं तार्किक चिन्तन का एक केन्द्रीय पहलू है, हमें उस पर विचार करना भी है, किन्तु यहाँ हम विवरण प्रस्तुत करनेवाली 'उक्तियों' का विश्लेषण नहीं कर रहे हैं, यहाँ हम मात्र यह देखना चाहते हैं कि किस प्रकार विवरण के द्वारा भी ज्ञान प्राप्त होता है।

हमने परिचयात्मक ज्ञान की विवेचना में देखा है कि हमें भौतिक वस्तुओं तथा अन्य मन (Other minds) आदि का ज्ञान साक्षात् परिचय से नहीं प्राप्त होता। साक्षात् परिचय से इन्द्रिय-प्रदत्तों का ज्ञान होता है, उनके द्वारा सूचित होनेवाली वस्तु का नहीं। तो भौतिक वस्तुओं, अन्य मन आदि का ज्ञान कैसे प्राप्त होता है। रसेल का कहना है कि वह ज्ञान विवरणात्मक ज्ञान है।

रसेल के अनुसार विवरण का अर्थ वैसा वाक्यांश (phrase) है, जो या तो **'कोई ऐसा, एक ऐसा या कोई इस प्रकार का'** (a so-and-so) या **'वह ऐसा या वह इस प्रकार का'** (the so and so) के रूप का हो। **'कोई ऐसा'** वाले वाक्यांश को रसेल अनेकार्थ अथवा अनिश्चित विवरण (ambiguous description) कहते हैं, तथा 'वह इस प्रकार का' जैसे वाक्यांश को निश्चित विवरण (Definite Description) कहते हैं। उदाहरणतः यदि हम कहते हैं 'एक व्यक्ति' अथवा 'कोई किताब', तो यह अनेकार्थक या अनिश्चित विवरण कहा जायगा, तथा जब हम कहते हैं 'वह लोहे के नकाब वाला व्यक्ति' 'मेघदूत का रचयिता' 'वह व्यक्ति' आदि तो यह निश्चित विवरण है। पहले उदाहरण में हम 'एक व्यक्ति' के विषय में कह रहे हैं, यहाँ यह निश्चित नहीं है कि वह व्यक्ति कौन है। उसी प्रकार 'कोई किताब' से किसी भी पुस्तक को सूचित किया जा सकता है। यह विवरण अनिश्चित है, अनेक को सूचित करने के कारण अनेकार्थक। किन्तु, दूसरे प्रकार के उदाहरण में किसी निश्चित व्यक्ति को सूचित किया जा रहा है, अतः उस वाक्यांश में जो विवरण प्रस्तुत है, वह निश्चित हैं।

हमारे जो सामान्य विवरणात्मक ज्ञान होते हैं वे प्रायः सदा ही निश्चित विवरण जैसे ही होते हैं, क्योंकि सामान्यतः जहाँ विवरण के द्वारा प्राप्त **ज्ञान** की बात करते हैं, वहाँ हमारा यह ध्यान रहता ही है कि इस विवरण के अनुरूप कोई निश्चित व्यक्ति का वस्तु है। अतः 'विवरणात्मक ज्ञान' की विवेचना में हम सामान्यतः **निश्चित विवरण** (Definite description) की ही बात करते हैं, तथा 'विवरण' से सामान्यतः निश्चित विवरण' का ही बोध करते हैं।

अतः रसेल कहते हैं कि जब हमें किसी वस्तु का ज्ञान विवरण के द्वारा प्राप्त होता है तो वह हम यह जान जाते हैं कि **'वह वस्तु इस प्रकार का'** है। इसका अर्थ है कि

Scanned with CamScanner

हम यह ज़ान जाते हैं कि कोई एक वस्तु है, जिसमें कोई विशेष गुण या लक्षण है, जो गुण या लक्षण उसी में है किसी अन्य में नहीं। सामान्यतः ऐसे उदाहरणों में यह भी निहित रहता है कि उस 'वस्तु' का हमें परिचयात्मक ज्ञान नहीं है। इन बातों को उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। हम कहते हैं 'मेघदूत का रचयिता'। इस वाक्यांश के कहने पर यदि कोई ज्ञान मिलता है तो वह यही है कि इस विशेष लक्षण को धारण करनेवाला कोई 'एक व्यक्ति' अवश्य है, जिसमें हमारा परिचयात्मक ज्ञान नहीं है। इस वाक्यांश के जानने पर उस व्यक्ति के विषय में अनेक कथनों का ज्ञान हो जाता है, किन्तु उसका साक्षात् परिचयात्मक ज्ञान नहीं है। किसी-किसी उदाहरण में तो परिचय हो भी सकता है, किन्तु फिर भी वह साक्षात् परिचयात्मक ज्ञान नहीं है। रसेल इसे एक सरल उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। हम यह कह सकते हैं कि जिस प्रत्याशी को सर्वाधिक वोट मिलेंगे वह विजय प्राप्त करेगा। इससे विवरणात्मक ज्ञान प्राप्त होता है। हम जान पाते हैं कि एक व्यक्ति ऐसा होगा जिसे सर्वाधिक वोट मिलेंगे और वह जीतेगा। सम्भवतः जीतने वाले व्यक्ति—जो अन्ततः जीतेगा—उससे हमारा परिचय भी हो, किन्तु वह परिचय सर्वाधिक वोट प्राप्त करनेवाले तथा जीतने वाले व्यक्ति का साक्षात् परिचय ज्ञान नहीं है। उस प्रारम्भिक परिचय में हमें इस प्रकार के वाक्य का ज्ञान नहीं है कि 'यही सर्वाधिक मत प्राप्त करनेवाला व्यक्ति है।' अतः जब हम कहते हैं कि 'मेघदूत का रचयिता है', या 'लोहे के नकाब वाला व्यक्ति है' तो हम यह जान जाते हैं कि एक व्यक्ति है जो मेघदूत का रचयिता है अथवा लोहे के नकाब वाला व्यक्ति है।

विवरणात्मक ज्ञान को इतना महत्त्व देने का एक विशेष कारण प्रतीत होता है। यह कहा जा सकता है कि इन्हें महत्त्व रसेल शायद इसी कारण देते हैं कि उन्हें लगता है कि साधारणतः सामान्य जातिवाचक शब्द तथा व्यक्तिवाचक नाम (Proper names) आदि वस्तुतः विवरण हैं। जैसे व्यक्तिवाचक संज्ञाओं अथवा नामों के विषय में सोचें। रसेल का कहना है कि किसी नाम या व्यक्तिवाचक संज्ञा के कहने पर जो किसी के मन में विचार उत्पन्न होता है उसे यदि व्यक्त किया जाय, तो वह एक विवरणात्मक वाक्य या वाक्यांश ही होगा। वह नाम विभिन्न श्रोताओं के मन में भिन्न-भिन्न विचार प्रस्तुत करेगा जिसके फलस्वरूप वह नाम विभिन्न श्रोताओं के लिए भिनन-भिन्न विवरण होगा—उनमें समानता बस इतनी ही रहेगी कि वे सब उसी व्यक्ति या वस्तु को सूचित करते हैं, जिसे वह नाम सूचित करता है। इस बात को रसेल के द्वारा लिए गये कुछ उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है।

मान लें हम किसी व्यक्ति के विषय में कुछ कहते हैं। यहाँ दो संभावनाएँ स्पष्ट हैं, या तो हम उस व्यक्ति से परिचित हैं या नहीं। पहले-पहले विकल्प को देखें—हम ऐसे व्यक्ति के विषय में कुछ कहते हैं जिससे हमारा परिचय है। किन्तु, हमारा परिचय—हमारा परिचयात्मक ज्ञान—उस व्यक्ति का नहीं है, वह तो कुछ ऐसे इन्द्रिय-प्रदत्तों का है जिन्हें हम उस व्यक्ति के 'शरीर' के साथ जोड़ देते हैं। हमारी उस व्यक्ति के विषय में कही गयी उक्ति उन इन्द्रिय-प्रदत्तों के माध्यम से उस व्यक्ति का विवरण है। यह आकस्मिकता है जिस समय हम उस व्यक्ति के विषय में कुछ कह रहे हैं, उस समय उसके 'शरीर' से संबंधित कौन-सा इन्द्रिय-प्रदत्त मन में उजागर होता है। भिन्न-भिन्न काल में ये विवरण भिन्न-भिन्न हो सकते हैं क्योंकि हर विवरण उस समय उजागर हुए इन्द्रिय-प्रदत्तों के माध्यम से ही दिया जाता है। तब यह बात अवश्य है कि हमें यह भी अवगति है कि ये

Scanned with CamScanner

सभी विवरण उसी व्यक्ति के विवरण हैं। अतः उसके विषय में हम जो कुछ भी कहते हैं, वह उस व्यक्ति के परिचयात्मक ज्ञान का व्यक्त रूप नहीं है, क्योंकि व्यक्ति का साक्षात् परिचय हमें नहीं है, ये सभी उस व्यक्ति के विषय में विवरण हैं। तब यह है कि हर ऐसा विवरण उन इन्द्रिय-प्रदत्तों के माध्यम से है जिनका हमें परिचयात्मक ज्ञान है।

अब हम दूसरी संभावना को देखें। मान लें कि हम एक ऐसे व्यक्ति के विषय में कुछ सुनते हैं या कहते हैं जिसके विषय में हम नहीं जानते, जिससे हमारा साक्षात् परिचय नहीं है। इसे स्पष्ट करने के लिए रसेल का ही उदाहरण लेना वांछनीय है। मान लें हम **बिस्मार्क** के विषय में कुछ कहते हैं। हम बिस्मार्क से परिचित नहीं, इतिहास के माध्यम से हम उसके विषय में कुछ सुनते हैं, तथा उस संबंध में अनेक भाव—धारणा बनाये हैं। मान लें हम कहते हैं 'बिस्मार्क जर्मन राज्य का पहला चांसलर था'। यह बिस्मार्क के विषय में एक **'विवरण'** है। रसेल का **कहना है कि इस विवरण का भी यदि विश्लेषण किया जाय तो स्पष्ट हो जायगा कि इस विवरण में जो विवरणात्मक ज्ञान प्राप्त होता है, वह किसी-न-किसी बिन्दु पर ऐसे तथ्य पर आधारित है जिसका हमें परिचयात्मक ज्ञान है।** इस विवरण में शब्द तो प्रायः भाववाचक हैं—केवल 'जर्मन' शब्द को छोड़कर। 'राज्य', 'पहला', 'चांसलर' आदि शब्द तो सामान्य (universals) हैं, उन्हें छोड़कर 'जर्मन' शब्द को देखें जो यहाँ पर सामान्य (Universal) नहीं है। प्रश्न है कि इस शब्द 'जर्मन' से हमें क्या अवगति होती है। यहाँ पर दो बातें ध्यान देने की हैं। एक तो यह कि इस शब्द से भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न अवगति होगी, सर्वथा एक अवगति नहीं हो सकती। किसी को नक्शें में 'जर्मनी' याद पड़ता है, किसी को उस देश के संबंध मे सुनी हुई कोई बात, तथा किसी को जो जर्मनी हो आया है, उस देश की कोई विशेष बात। किन्तु, इन सभी भिन्न-भिन्न ढंगों से 'जर्मन' शब्द को समझने में एक दूसरी बात महत्त्वपूर्ण है। हर व्यक्ति की अवगति का आधार अन्ततः कोई ऐसा ही ज्ञान है जो उसे परिचय से प्राप्त हुआ है। इसका अर्थ है कि किसी विशेष वस्तु का विवरणात्मक ज्ञान अन्ततः परिचयात्मक ज्ञान का सहारा लेता है। कोई विवरण किसी विशेष पर तभी लग सकता है जब उसके आधार परिचयात्मक ज्ञान से प्राप्त ज्ञान हो।

इसी कारण रसेल कहते हैं हर स्थान का नाम भी इसी प्रकार ऐसा विवरण सूचित करता है जिसमें कुछ विशेषों के परिचयात्मक ज्ञान के द्वारा विवरण दिया गया है। 'दिल्ली' शब्द के कहने से हर व्यक्ति के मन में कुछ ऐसे ज्ञान का उद्भव होता है जिसका उसे परिचय है। एक व्यक्ति के मन में बहुत ऐसे ज्ञान का उद्भव होता है जिसका उसे परिचय है। एक व्यक्ति के मन में यह बात आती है कि 'यह वह शहर है जहाँ लाल किला है', दूसरे के मन में यह बात आती है कि 'यह भारत की राजधानी है'। 'लाल किला' अथवा 'राजधानी' को भी समझने का ढंग उसके अपने परिचयात्मक ज्ञान पर आधृत है। यदि उसने 'लाल किला' को देखा है, तो कुछ इन्द्रिय-प्रदत्तों का उसे साक्षात् परिचय-ज्ञान हुआ था जिसके माध्यम से उसने 'लाल किला' को जाना है। यदि उसने 'लाल किला' को देखा नहीं; उसके विषय में कुछ सुना है, तो जो सुना है उसके विश्लेषण में भी अन्ततः कुछ ऐसे ही तत्त्व उजागर होंगे जिनका उसे परिचयात्मक ज्ञान है, तथा जिसके अनुरूप वह 'लाल किला' के विषय में सुनी हुई बात को समझता है।

अतः रसेल एक बड़े महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। विवरणात्मक वाक्यों के विश्लेषण पर जो मूल सिद्धांत प्रकट होता है वह यह है कि —हर ऐसा विवरणात्मक

Scanned with CamScanner

वाक्य जिसका हमें अवबोध होता है वह ऐसे ही अंशों से संरचित होता है जिनका हमें परिचयात्मक ज्ञान है। (Every Proposition which we can understand must be composed wholly of constituents with which we are acquainted) इसे स्पष्ट करते हुए रसेल स्वीकारते हैं कि इस कथन के विरुद्ध आपत्तियाँ उठायी जा सकती हैं; किन्तु, इसमें जो केन्द्रीय बात कही गयी है वह महत्त्वपूर्ण है। उदाहरणतः हम जूलियस सीजर के विषय में कुछ कहते हैं। यह स्पष्ट है हमारे मन में जूलियस सीजर नहीं है, क्योंकि उससे हम परिचित नहीं हैं। तो, हमारे मन में जूलियस सीजर के संबंध में कुछ विचार है, कुछ विवरण हैं। हमारा कथन सीजर के विषय में है, किन्तु वस्तुतः यह एक विचार का विवरण है—एक ऐसा विवरण जो सीजर पर लगता है, यह विवरण सीजर पर लगता भी इसीलिए है क्योंकि इसमें ऐसे विशेष तथा सामान्य हैं जिनका हमें परिचय है। मान लें हमारे मन में यह विचार आया—'वह जो मिश्र की रानी के संपर्क में आया था'। यहाँ 'मिश्र' 'सम्पर्क में आना' आदि सभी का अवबोध अन्ततः ऐसे विशेषों की जानकारी पर ही आधृत है—जिनका हमें परिचय है। 'मिश्र' देश के विषय में जो हमारी समझ है वह अन्ततः ऐसे तथ्य पर आधारित है जिसका हमें परिचयात्मक ज्ञान है। इसी अर्थ में विवरणात्मक ज्ञान परिचयात्मक ज्ञान पर निर्भर है।

Scanned with CamScanner

रसेल का तार्किक अणुवाद दर्शन
(Philosophy of Logical Atomism)

भूमिका

वैसे तो रसेल के चिन्तन का क्षेत्र बड़ा ही विस्तृत रहा है, किन्तु 'दर्शन' शब्द के पारस्परिक अर्थ में उनके दार्शनिक चिन्तन की पराकाष्ठा उनके तार्किक अणुवाद(LogicalAtomism) के दर्शन में हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके विचार की तार्किक सूक्ष्मताएँ तथा उनकी तात्त्विक मान्यताएँ परिपक्व रूप में इस तार्किक अणुवाद के दर्शन में उजागर होती हैं। इस संबंध में उन्होंने अन्य कुछ लेख भी लिखे हैं, किन्तु उनका यह दर्शन उनके आठ भाषणों के अंतर्गत संकलित है, जिन भाषणों को उन्होंने स्वयं **'तार्किक अणुवाद दर्शन'** का नाम दिया है। इन भाषणों के अनुसार उनके विचारों को प्रस्तुत करना तो अधिक उपयुक्त होता, किन्तु इस पुस्तक में इस विचार को इतना लम्बा स्थान देना संभव नहीं है। अतः यहाँ उन भाषणों के निचोड़ को अपने ढंग से व्यवस्थित कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। इतना कहना इसी स्थान पर उपयुक्त होगा कि इस दर्शन का एक**तात्त्विक पक्ष** है (Metaphysical Side) तथा एक **तार्किक पक्ष** (Logical Side) है। किन्तु, दोनों एक दूसरे के साथ ऐसे जुटे हैं कि एक के विवरण में दूसरे का उल्लेख होना अनिवार्य हो जाता है। अतः हमारी व्यवस्था में किसी-किसी स्थल पर कुछ विचारों का उल्लेख दुहराया जा सकता है।

रसेल अपने तार्किक अणुवाद दर्शन पर कैसे पहुँचते हैं?

प्रारम्भ से ही इस प्रश्न की विवेचना वांछनीय है क्योंकि इससे भी तार्किक अणुवाद को समझने में सहायता मिलती है। रसेल को व्हाइटहैट के साथ लिखी गयी अपनी पुस्तक **'प्रिंसिपिआ मैथेमेटिका'** की अपार सफलता पर बड़ा संतोष हुआ। उस पुस्तक का मूल प्रयास यह दिखाना था कि गणित का वास्तविक आधार तर्कशास्त्र है। उदाहरणतः संख्या (Numbers) संबंधी उक्तियों का उन्होंने रूपान्तर इस प्रकार किया कि **'संख्या'** के प्रयोग की आवश्यकता ही न रहे, तथा पूरी उक्ति तार्किक भावों में जैसे 'तथा', 'या', 'नहीं', 'कुछ ऐसा है' आदि में पूर्णतया रुपान्तरित हो जाय। जैसे 'मेरे पास एक गाड़ी है'—इस वाक्य को इस प्रकार रूपान्तरित किया जा सकता है कि संख्या 'एक' की आवश्यकता ही न रहे, और वाक्य का अर्थ पूर्णतया निश्चित रूप में स्पष्ट हो जाय। रसेल ने इसे इस रूप में रूपान्तरित किया 'कुछ ऐसा है जो मेरी गाड़ी है, वह भी इस तरह कि यदि कोई ऐसी चीज है जिसे मेरी गाड़ी कहा जा सके तो वह उसके साथ एकरूप है'। यहाँ ऐसे उदाहरणों को बढ़ाने की आवश्यकता नहीं, एक ही उदाहरण से रसेल के प्रयत्नों का 'अंदाज' लग जाता है।

प्रश्न यह उठता है कि सामान्य साधारण वाक्य को ऐसे जटिल वाक्य में रूपान्तरित करने की क्या आवश्ययकता है। गणित को तर्कशास्त्र में पूर्णतया रूपान्तरित करने की योजना का प्रयोजन क्या है? रसेल को इसमें कई लाभ दिखाई दिये। (1) प्रथमतः तो **लाघवन्यय** (Ocham razor) की दृष्टि से यह योजना उपयुक्त दिखाई देती है। गणितो

Scanned with CamScanner

भावों को तर्कशास्त्रीय भावों में रूपान्तरित किया जा सकता है, किन्तु तर्कशास्त्रीय भावों को गणिती भावों में रुपान्तरित नही किया जा सकता। सैद्धान्तिक मितव्ययिता की दृष्टि से वैचारिक उपकरणों का कम-से-कम होना उपयुक्त होता है। जब गणिती भाव प्रथमिक नहीं रहे, तो लाघवन्याय की दृष्टि से उनका रुपान्तरण वांछनीय है। (2) पुनः—यह रूपान्तरण उपर्युक्त इसलिए भी है कि तार्किक भाव गणिती भावों से **अधिक स्पष्ट** (Clear) होते हैं। गणिती भावों से कुछ वैचारिक विसंगतियाँ, कुछ विरोधाभास आदि उत्पन्न हो जाते हैं, किन्तु जब उनका रूपान्तरण तार्किक भावों में हो जाता है तो उन विसंगतियों का निराकरण हो जाता है। (3) पुनः—रसेल को प्रतीत होता है कि यह रूपान्तरण इसलिए भी ठीक है कि इससे **अधिक निश्चयता** (Certainty) भी प्राप्त होती है। इसका यह अर्थ नहीं कि '5 + 5 = 10' का तार्किक रूपान्तरण इस वाक्य से अधिक सत्य एवं निश्चित होगा, यहाँ निश्चयता का संदर्भ दूसरा है। यह गणिती वाक्य '5 + 5 = 10' कुछ मान्यताओं पर आधृत है, जिन्हें माने बिना इसे स्वीकारा नहीं जा सकता है। वे मान्यताएँ हैं वर्ग (Classes), क्रम (Serial), अनन्त वर्ग (infinite Classes) आदि। तार्किक भावों को ऐसी मान्यताओं की आवश्यकता नहीं। अर्थात् यदि इन गणित वाक्यों का तार्किक रूपान्तरण हो सके, तो वे गणिती मान्यताओं से मुक्त हो जाते हैं, तथा इस विशेष अर्थ में—किसी मान्यता पर आधृत नही रहने के अर्थ में—उनमें निश्चयता अधिक रहती है। अतः इन्हीं **तीनों लाभों** को ध्यान में रखते हुए रसेल ने इस प्रकार के रूपान्तरण का बृहत् प्रयास किया।

रसेल के इस प्रयास को बड़ा प्रबल साधुवाद मिला। इससे उत्साहित हो रसेल ने देखा कि जिस **'तकनीक'** को उन्होंने अपनी पुस्तक 'प्रिसपिआ मेथेटिका' में परिष्कृत किया है, उसे दर्शन के अन्य क्षेत्रों में भी लगाया जा सकता है। यदि गणिती भावों में निहित विसंगतियों, विरोधाभासों आदि का निराकरण इस तकनीक से हो सकता है, तो शायद दर्शन के अन्य क्षेत्र में भी यह तकनीक कारगर सिद्ध हो। पारम्परिक दर्शन के क्षेत्र में भौतिक वस्तु (Physical Object), अन्य मन (others mind), आत्म (Ego) सामान्य (Universals) आदि भावों में भी वैचारिक भ्रान्तियाँ, विसंगतियाँ, आत्मव्याघातक विचार आदि उत्पन्न होते हैं। रसेल ने सोचा कि अपने **'तार्किक तकनीक'** का प्रयोग वे इन क्षेत्रों में करें। इसी प्रयोग की प्रक्रिया में उन्होंने 'तार्किक अणुवाद दर्शन' की रूपरेखा खींची। तो गणिती दर्शन की समस्याओं से निपटने के जिस तकनीक का उन्होंने आविष्कार किया, उस तकनीक का पारम्परिक दर्शन की समस्याओं पर लगाकर देखने के अभियान में उनके तार्किक अणुवाद का दर्शन रूप ले सका।

तार्किक अणुवाद क्या है?

जैसा कि इस नाम से ही स्पष्ट है, यह एक ऐसा सिद्धान्त है जिसका एक पक्ष तार्किक है, तथा दूसरा पक्ष तात्त्विक। ऊपर के खण्ड से स्पष्ट हो जाता है कि इस सिद्धान्त का तार्किक पक्ष रसेल के गणिती दर्शन पर आधारित है, तथा उस आधार पर कुछ तत्त्व-मीमांसीय निष्कर्षों की स्थापना करने का यहाँ प्रयास किया गया है।

यह 'अणुवाद' है। अणुवाद ऐसा तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्त है जो विश्व के परम तत्त्वों के रूप में कुछ 'अणु' की कल्पना करता है। अणु (Atoms) का अर्थ है वह सरलतम अविभाज्य तत्त्व जिसका और विभाजन नहीं हो सके। रसेल भी ऐसे अभिभाज्य अणु की खोज में हैं। **किन्तु,** उनका कहना है कि जिन अणुओं तक वे पहुँचते हैं, वे अणु भौतिक

Scanned with CamScanner

अणु (Physical Atoms) नहीं है, बल्कि **तार्किक** (Logical) अणु हैं। पुनः वे कहते हैं कि इन अणुओं तक पहुँचने की जो प्रक्रिया है, वह कोई भौतिक विभाजन प्रक्रिया (Process of Physical Analysis) नहीं है, बल्कि तार्किक विश्लेषण (Logical Analysis) है। इसी कारण उनका अणुवाद तार्किक है। यही कारण है कि उनका कहना है उनके तार्किक अणुवाद सिद्धान्त का अणुवाद तार्किक है, तथा तार्किकता अणुवादी है। इन बातों की उनके विचार में बड़े सरल ढंग से व्याख्या की जा सकती है।

उनका सिद्धान्त 'अणुवाद' है क्योंकि अणुवाद के तीन विशिष्ट एवं प्रधान लक्षण इसमें उपस्थित है। एक तो अणुवाद तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्त है जिसका लक्ष्य विश्व की तात्त्विक व्याख्या हैं। तात्त्विक व्याख्या तो बहुत बड़ा दावा है, किन्तु सामान्य ढंग से तात्त्विक अन्वेषण का लक्ष्य इस प्रश्न का समाधान है कि **विश्व के विषय में हम क्या जान सकते हैं?** रसेल के तार्किक अणुवाद का यह मूल प्रश्न है। पुनः अणुवाद का दूसरा अनिवार्य लक्षण है कि वह अनेकवादी होता है। रसेल का अणुवाद भी सामान्य ज्ञान (Common Sense) के अनुरूप यह मानकर चलता है कि विश्व में अनेक, पृथक्-पृथक् तत्त्व हैं—वस्तुएँ हैं। अणुवाद का विशिष्ट लक्षण है कि विचार का लक्ष्य कुछ अणुतत्त्वों (Atoms) की खोज है, ऐसे अणुतत्त्वों की खोज जो विश्व की जानकारी देने में उपयोगी तथा अनिवार्य सिद्ध हों। रसेल का अणुवाद भी ऐसे सरलतम तत्त्वों की खोज करता है जिसके माध्यम से विश्व की जानकारी मिल सके जो विश्व की वस्तुस्थिति (Inventory) बनाने में सहायता कर सके। अतः रसेल के इस सिद्धान्त की अणुवादी इस कारण कहा गया है, क्योंकि इसमें अणुवाद के कुछ विशिष्ट एवं अनिवार्य लक्षण उपस्थित हैं।

किन्तु, उनका यह अणुवाद पारम्परिक अणुवाद के समान तात्त्विक अणुवाद नहीं, बल्कि **तार्किक** अणुवाद है। तात्त्विक अणुवाद या तो भौतिक होता है जड़वादी (Materialistic) अणुवाद के समान (जैसे प्राचीन ग्रीक अणुवाद) या अभौतिक या आध्यात्मिक होता है (लाइबमीज़ के चिद्बिन्दु सिद्धान्त के समान)। रसेल का अणुवाद **तार्किक** (logical) है। प्रथमतः तो वह इस कारण कि, जैसा रसेल स्वयं कहते हैं, जिस प्रकार के अणुतत्त्वों (Atoms) की वे बात करते हैं, वे भौतिक नहीं, **तार्किक** हैं। उदाहरणतः जिन अणुतत्वों से विश्व की जानकारी मिलती है वे भाषीय इकाई हैं (language unit)। अणुवाक्यों (Atomic propositions) से तथ्यों की जानकारी होती है। अतः एक दृष्टि से वे अणुतत्त्व तार्किक हैं, क्योंकि वे भौतिक अथवा मानसिक अणुतत्त्व नहीं, भाषीय अणुतत्त्व हैं। पुनः जिस प्रक्रिया से इन अणुतत्त्वों तक पहुँचा जाता है, वह प्रक्रिया भी तार्किक है। वह प्रक्रिया तार्किक विश्लेषण (Logical Analysis) की प्रक्रिया है। इसी कारण रसेल कहते हैं कि उनका तर्क (logic) ही अणुवादी है। यह अणुवादी इस कारण है कि एक ओर तो यह मानकर अग्रसर होता है कि जगत् में अनेक, एक दूसरे से पृथक-पृथक् तत्त्व हैं तथा दूसरी ओर यह जिस प्रक्रिया को अपनाता है वह प्रक्रिया विश्लेषण की प्रक्रिया है। जिस प्रकार के अणुतत्त्वों की वे बात करते हैं उनमें कुछ तो **विशेष** (Particulars) कहे गये हैं, जिनके अंतर्गत रंग के धब्बे, कुछ आकार-विशेष आवाज यदि आते हैं, तथा कुछ संबंध(relations) या गुण (Qualities) या विधेय (Predicates) आते हैं। ये सभी भौतिक अणु नहीं हैं, बल्कि तार्किक अणु हैं। इनके अतिरिक्त जिस प्रक्रिया से इनकी जानकारी मिलती है, वह प्रक्रिया भी तो तार्किक है, विश्लेषण(Analysis)की प्रक्रिया है। रसेल के अनुसार **विश्लेषण**

Scanned with CamScanner

वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा अस्पष्ट भावों से उनमें निहित स्पष्ट भावों तक पहुँचा जा सकता है। सामान्यतः हमें हमारी बहुत-सी धारणाएँ स्पष्ट प्रतीत होती हैं। किन्तु, यदि हम उनका विश्लेषण करना चाहें तो वे बड़े ही अस्पष्ट (vogus) प्रतीत होते हैं। 'इस कमरे में अनेक व्यक्ति हैं'। हमें लगता है कि यह तो बड़ा स्पष्ट है। किन्तु, यदि हम उनका विश्लेषण करना चाहें तो हमें स्पष्ट रूप में प्रतीत होगा कि यह वैसा स्पष्ट नहीं है जैसा हम प्रारम्भ में समझते थे। 'कमरे में होना' क्या है? एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से पृथक् कैसे किया जाता है?'—इन प्रश्नों से इसकी अस्पष्टता स्पष्ट होती है। इसका अर्थ हैं कि विश्लेषण प्रक्रिया अस्पष्ट भावों से स्पष्ट भावों तक पहुँचने की प्रक्रिया है। सामान्यतः एक मत यह भी दिया जाता है कि विश्लेषण प्रक्रिया से भावों की एकरूपता उनकी इकाई का खण्डन हो जाता है, अतः विश्लेषण से प्राप्त भाव भावों के असत्य रूप होंगे। किन्तु, रसेल ऐसा नहीं मानते। उनका कहना है कि सत्यता या असत्यता के प्रश्न तो कुछ हद तक मनोवैज्ञानिक प्रश्न है। यदि मुझे कुछ सत्य प्रतीत होता है, तो मेरे लिए वह यथेष्ट है। 'इस कमरे में अनेक व्यक्ति हैं'—सामान्य ज्ञान (Common-sense) को यह सत्य प्रतीत होता है, अतः सामान्य ज्ञान इसके विश्लेषण के बखेड़े में नहीं उलझता। किन्तु, यदि यह प्रश्न उठता है कि आखिर इस उक्ति से हमें क्या जानकारी मिली, तो विश्लेषण अनिवार्य हो जाता है तथा विश्लेषण-प्रक्रिया का लक्ष्य सत्य-असत्य तत्त्वों तक पहुँचना नहीं, बल्कि ऐसे तत्त्वों तक पहुँचना है जिसका निषेध तर्कतः नहीं किया जा सके (undeniable Data)। वस्तुतः इन्हीं तत्त्वों में उन अस्पष्ट तत्त्वों की तार्किक सत्यता होगी। रसेल के अणुतत्त्व इसी प्रकार के तत्त्व हैं, ऐसे तत्त्व जिनका निषेध सम्भव नहीं, तथा जिन्हें तार्किक विश्लेषण के द्वारा जानने का प्रयास किया जा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि तार्किक अणुवाद **तार्किक** है, क्योंकि जिन अणुतत्त्वों की यह खोज करता है वे तार्किक हैं, तथा जिस प्रक्रिया से उन तक पहुँचा जाता है वे भी तार्किक हैं।

'तार्किक अणुवाद क्या है?'—इस प्रश्न के प्रारंभिक समाधान से ही एक बात स्पष्ट हो जाती है—इस सिद्धांत से विश्व के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त होती है, तथा उस जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया स्पष्ट होती है। उस जानकारी का विशदीकरण तथा विश्व की वस्तु-तालिका (Inventory of the world) तो अन्त में स्पष्ट होगी, किन्तु इतना तो है कि इसमें जानकारी तथ्यों की होती है तथा विशेषों की होती है। तथ्य (Facts) क्या है—इसके विश्लेषण में ही विशेषों तथा विधेयों (Predicates), संबंधों, गुणों आदि का उल्लेख आ जाता है। अतः अब सबसे पहले हम यह देखेंगे कि रसेल के अनुसार **तथ्य** (facts) क्या है। इन तथ्यों की जानकारी प्रतिज्ञप्तियों से होती है, क्योंकि तार्किक विश्लेषण जो तथ्य की जानकारी का माध्यम है, प्रतिज्ञप्तियों का होता है। अतः तथ्य के बाद रसेल के प्रतिज्ञप्ति विचार पर कुछ विवेचना होगी। उसके बाद पुनः तार्किक अणुवाद के तार्किक पक्ष को उस परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना होगा, और तब अन्त में तार्किक अणुवाद के तात्त्विक पक्ष की विवेचना होगी। इन्हीं चार उपखण्डों में अब तार्किक अणुवाद दर्शन को प्रस्तुत करने का प्रयत्न होगा।

तथ्य (Facts) क्या है?

तथ्यों के स्वरूप को समझने में भी विश्लेषण का महत्त्व स्पष्ट होता है। सामान्यतः सामान्य ज्ञान के लिए तथ्यों के सम्बन्ध में कोई व्यामिश्र नहीं है। किन्तु, यदि यह पूछा जाय

Scanned with CamScanner

कि अच्छा वस्तुतः तथ्य है क्या? तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यह वैसा स्पष्ट नहीं है जैसा सामान्य ज्ञान इसे समझता है। वस्तुतः रसेल यह तो स्वीकारते ही हैं कि तथ्यों की परिभाषा तो दी ही नहीं जा सकती। किन्तु, 'तथ्य' से जिस प्रकार की बातें कही जाती हैं, उनके विश्लेषण के आधार पर तथ्यों के स्वरूप को स्पष्ट किया जा सकता है, तथा वही रसेल ने भी किया है।

प्रथमतः तो यह स्पष्ट कर ही लेना है कि कुछ ऐसी वस्तएँ जिन्हें साधारणतः तथ्य समझा जाता है वे तथ्य नहीं है। रसेल कहते हैं कि किसी अस्तित्ववान् वस्तु को तथ्य नहीं कहा जा सकता। साधारणतः हम ऐसा करते हैं। हम साधारणतः कहते हैं कि 'मेज' तथ्य है, 'सूर्य' तथ्य है आदि। उसी प्रकार हम किसी विशेष व्यक्ति को भी 'तथ्य' समझ लेते हैं, नैपोलियन, सुकरात आदि को तथ्य कह लेते हैं। रसेल के अनुसार ऐसा समझना भ्रान्ति है। सूर्य 'तथ्य' नहीं है, किन्तु यह तथ्य है कि सूर्य पूर्व में उदित होता है। नेपोलियन 'तथ्य' नहीं है, किन्तु यह तथ्य है कि नेपोलियन ने जोसेफिन से विवाह किया। मेज तथ्य नहीं हैं, किन्तु यह तथ्य है कि मेज चौकोर है।

क्या अन्तर पड़ा? इन उदाहरणों से क्या स्पष्ट होता है? इसी के विश्लेषण से तथ्य का स्वरूप स्पष्ट होता है। व्यक्ति नेपोलियन तथ्य नहीं है, किन्तु यह तथ्य है कि नेपोलियन ने जोसेफिन से विवाह किया। अर्थात्, यह तथ्य कहा जा रहा है कि किसी वस्तु में कुछ संबंध है। उसी प्रकार 'मेज' को तथ्य नहीं कहा गया, किन्तु यह तथ्य है कि मेज चौकोर है। अर्थात् यह तथ्य है कि किसी वस्तु में कुछ गुण है। इस प्रकार रसेल के अनुसार तथ्य का एक स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। 'तथ्य' से रसेल का तात्पर्य है कि कुछ वस्तुओं में कुछ गुण हैं अथवा कुछ वस्तुओं में कुछ संबंध है।

इससे तथ्य के एक महत्त्वपूर्ण रूप पर प्रकाश पड़ता है। तथ्य नाम या किसी एक शब्द से व्यक्त नहीं होते, प्रतिज्ञप्तियों (Propositions) से व्यक्त होते हैं। वस्तुतः रसेल का कहना है कि तथ्य वे हैं जो प्रतिज्ञप्तियों को सत्य या असत्य बनाते हैं। यदि कहा जाता है कि 'वर्षा हो रही है', तो, एक प्रकार के मौसम से यह वाक्य सत्य हो जाता है, तथा दूसरे प्रकार के मौसम में असत्य हो जाता है। मौसम में कुछ ऐसी तथ्यात्मक स्थितियाँ हैं जो इस वाक्य को या तो सत्य या असत्य बनाती हैं। जब हम 'दो तथा दो को चार' कहते हैं, तो गणिती संदर्भ में कुछ है जो इसे सत्य बनाता है तथा 'दो तथा दो आठ' को असत्य। अतः तथ्य के स्वरूप को समझने का सबसे सरल ढंग यही है कि तथ्य वह है जिसके चलते वाक्य-प्रातिज्ञप्तियाँ—सत्य या असत्य होती हैं।

वस्तुतः रसेल के अनुसार शब्दों का या किसी वस्तु के नाम (Names) का तथ्यों के साथ यह संबंध नहीं है जो वाक्यों या प्रतिज्ञप्तियों का है। हर तथ्य के अनुरूप दो वाक्य हो सकते हैं, एक सत्य तथा दूसरा असत्य, किन्तु किसी विशेष शब्द या किसी विशेष नाम के अनुरूप तथ्यों का ऐसा संबंध नहीं होता। 'सुकरात' नाम को कोई तथ्य सत्य या असत्य नहीं बनाता, किन्तु **एक तथ्य** ऐसा है जो 'सुकरात जीवित है' को असत्य, तथा 'सुकरात जीवित नहीं है' को सत्य बना देता है। इसी विशिष्टता के कारण रसेल ने तथ्यों की व्याख्या यह कह कर की है, इनसे वाक्य सतय या असत्य बनाते हैं।

इस स्थल पर एक स्पष्टीकरण अनिवार्य है। ऊपर कही बातों से यह धारणा नहीं बननी चाहिए कि तथ्य सत्य या असत्य होते हैं। रसेल के अनुसार तथ्य-तथ्य हैं, उनके सत्य या असत्य होने का प्रश्न नहीं उठता। यह ठीक है कि यह भी नहीं कहा जा सकता कि सभी

Scanned with CamScanner

तथ्य सत्य ही हैं। सत्य-असत्य एक दूसरे के पूरक हैं, **अपने** में तथ्यात्मक नहीं। कोई बात सत्य है, इसका अर्थ है कि वही असत्य हो सकता था। अतः तथ्य अपने में सत्य या असत्य नहीं होता। जिन वाक्यों में तथ्य व्यक्त होता है वे सत्य या असत्य होते हैं। तथ्य अपने में सत्य-असत्य नहीं, बल्कि वाक्यों को सत्य या असत्य बनाते हैं।

इस विवेचना से तथ्यों की वस्तुनिष्ठता स्पष्ट होती हैं। रसेल का कहना है कि तथ्य वस्तुनिष्ठ जगत् (Objective world) के अंग हैं। तथ्यों की हम संरचना नहीं करते। सामान्यतः हमारी समझ में वस्तुनिष्ठ जगत् में वस्तुएँ रहती हैं, विशेष हैं। रसेल का कहना है कि तथ्य भी वस्तुनिष्ठ जगत् के उसी प्रकार के अंग हैं। यदि जगत् की वस्तु-सूची (Inventory) बनानी है, तो केवल विशेषों का नाम गिना देने पर यह तालिका पूर्ण नहीं होगी, उसमें तथ्यों का रखना भी अनिवार्य हैं।

अतः कहा जा सकता है कि विशेषों(Particulars)के आपसी संबंधों का जो हमें अनुभव होता है, वही तथ्य है। 'गुलाब तथ्य नहीं हैं, 'लाली' तथ्य नहीं है, किन्तु 'गुलाब' के लाल होने का जो अनुभव है वह तथ्य है, जिसे हम 'गुलाब लाल है' वाक्य में व्यक्त करते हैं।

विभिन्न प्रकार के तथ्य *(Facts)*

रसेल के तथ्य-सम्बन्धी विचारों की मौलिकता इसमें भी है कि रसेल शायद एकमात्र विचारक है जिन्होंने विभिन्न प्रकार के तथ्यों को स्वीकारने की आवश्यकता को समझा है। यह ठीक है कि बाद में रसेल के इस विचार की आलोचना भी हुई, किन्तु रसेल को इन भेदों को स्वीकारने के पीछे एक वैचारिक आधार था। सामान्यतः जब तथ्यों को मात्र तथ्य कहा जाता है तो उसके पीछे यही विचार रहता है कि तथ्य तो तथ्य है, अतः सभी तथ्य एक समान हैं। किन्तु, रसेल के विचार में तथ्य वे हैं जिनके चलते वाक्य या अभिव्यक्ति सत्य या असत्य होते हैं। किन्तु, रसेल के विचार में तथ्य वे हैं जिनके चलते वाक्य, या अभिव्यक्ति सत्य या असत्य होते हैं। सामान्य दृष्टि से भी सभी प्रकार के वाक्य या अभिव्यक्तियाँ एक-समान नहीं होतीं, भावनात्मक वाक्य तथा निषेधात्मक वाक्य में मौलिक अन्तर है, विशेषों से संबंधित वाक्यों में तथा सामान्य वाक्यों में अन्तर है। तो सभी प्रकार के वाक्य एक ही प्रकार के तथ्य से सत्य-असत्य कैसे बन जायेंगे। तथ्यों का निर्देश प्रतिज्ञप्तियों से होता है, तो यह कैसे युक्तिसंगत प्रतीत होगा कि भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों से जिन तथ्यों का निर्देश हो रहा है, वे सभी एक-जैसी हैं? अतः रसेल के लिए तथ्यों में भेद करने का आधार स्पष्टतया तार्किक है।

रसेल जब विभिन्न प्रकार के तथ्यों की बात करते हैं, तो उनका उद्देश्य यह कहना नहीं है कि 'इतने' प्रकार के तथ्य हैं। उनका उद्देश्य यह दिखाना है कि भिन्न-भिन्न संदर्भ में भिन्न-भिन्न ढंग से तथ्यों में भेद किया जा सकता है।

सर्वप्रथम उन्होंने विशेष तथ्य (Particular Facts) तथा सामान्य तथ्य (General Facts) में भेद किया है। विशेष तथ्य से उनका तात्पर्य एक निश्चित तथ्य से है जिससे एक निश्चित प्रतिज्ञप्ति सत्य या असत्य बनती है जैसे 'यह सफेद है'। कोई विशेष तथ्य है जिसके अनुरूप यह प्रतिज्ञप्ति सत्य या असत्य होगी। इसके विपरीत जब हम कहते हैं कि 'सभी मनुष्य मरणशील हैं' तो यह वाक्य जिस तथ्य से चलते सत्य या असत्य कहा जा सकता है वह कोई विशेष तथ्य नहीं है, किन्तु उससे भिन्न तथ्य है जिसे वे **सामान्य तथ्य** (General Fact) कहते हैं। इसे स्वीकारने के लिए उन्होंने बहुत ही सबल युक्ति दी

Scanned with CamScanner

है। प्रश्न है कि इस वाक्य की सत्यता-असत्यता के लिए अलग से सामान्य तथ्यों को स्वीकारने की क्या आवश्यकता है। इस वाक्य की सत्यता-असत्यता तो अन्ततः विशेष तथ्यों पर ही आधृत है। यदि हम कहें 'क मरणशील है', 'ख मरणशील है' कहते-कहते सभी मनुष्यों को अलग-अलग मरणशील कहते हैं, तो उन सभी विशेष तथ्यों के आधार पर वाक्य 'सभी मनुष्य मरणशील हैं की सत्यता-असत्यता निर्धारित हो जाती है। रसेल का कहना है कि ऐसा नहीं है। यदि ऐसा होता तो सामान्य तथ्यों को स्वीकारने की आवश्यकता नहीं रहती। किन्तु, केवल 'क मरणशील है', 'ख मरणशील है', आदि-आदि सभी मनुष्यों को पृथकृ-पृथक कहने से 'सभी मनुष्य मरणशील है', की सत्यता-असत्यता निर्धारित नहीं होती, क्योंकि इन सभी पृथक्-पृथक् वाक्यों के अतिरिक्त एक अन्य वाक्य की स्थापना भी अनिवार्य है। उस वाक्य की स्थापना के बाद ही 'सभी मनुष्य मरणशील है' वाक्य का पूर्ण रूपान्तर हो सकता है। वह वाक्य हैं 'क, ख, ग, आदि सब मिल कर 'सभी मनुष्य' है।'' अब इस वाक्य की सत्यता-असत्यता तो उन **विशेष तथ्यों** से स्थापित नहीं होती, तथा इस वाक्य की सत्यता-असत्यता निर्धारण के बिना 'सभी मनुष्य मरणशील हैं' वाक्य की सत्यता-असत्यता निर्धारण के बिना 'सभी मनुष्य मरणशील हैं' वाक्य की सत्यता-असत्यता स्थापित नहीं हो सकती? अतः स्वीकारना पड़ता है कि जिन तथ्यों से इस प्रकार के सामान्य वाक्य सत्य-असत्य बनते हैं, वे विशेष तथ्य नहीं, किन्तु उनसे भिन्न **सामान्य तथ्य** (General facts) हैं।

रसेल ने भावात्मक तथ्य (Positive Facts) तथा अभावात्मक अथवा निषेधात्मक तथ्य (Negative Facts) में भी भेद किया है। 'दिवाल उजली है', 'सुकरात जीवित था' —इस प्रकार के वाक्य जिन तथ्यों से सत्य-असत्य बनते हैं, उन्हें भावात्मक तथ्य कहा जा सकता है, तथा 'दिवाल हरी नहीं है' सुकरात जीवित नहीं है'—जैसे वाक्य जिन तथ्यों से सत्य-असत्य बनते हैं उन्हें निषेधात्मक तथ्य कहा गया है। रसेल ने स्वयं कहा है कि जब पहली बार अपने भाषण में उन्होंने अपने इस 'निषेधात्मक तथ्य' का उल्लेख किया, तो लोगों ने बड़ी आपत्ति उठाई। किन्तु, इन्हें स्वीकारने के पीछे रसेल की अपनी तार्किकता है। सामान्य धारणा है कि जिस तथ्य से काई भावात्क वाक्य सत्य सिद्ध होगा, उसी तथ्य से उसका निषेधात्मक वाक्य असत्य बन जायगा। 'दिवाल उजली है', मान लें कुछ तथ्य हैं जिसके कारण यह वाक्य सत्य है। अब उसी तथ्य के चलते यह भी कहा जा सकता है कि निषेधात्मक वाक्य 'दिवाल उजली नहीं हैं' असत्य है। तो, निषेधात्मक वाक्यों की सत्यता-असत्यता के लिए अलग से निषेधात्मक तथ्यों को मानना आवश्यक नहीं। किन्तु, रसेल का कहना है कि यदि उदाहरणों को थोड़ा परिवर्तित करके देखें, तो निषेधात्मक तथ्यों को स्वीकारना युक्तिसंगत प्रतीत होने लगेगा। हम सामने की दिवाल के विषय में कहते हैं कि 'यह दिवाज उजली है।' पुनः हम कहते हैं कि 'यह दिवाल हरी नहीं है।' दोनों कथन इस दिवाल के विषय में सत्य कथन हैं। अब यदि यह कहें कि दोनों कथन सत्य इसी कारण हे कि दोनों से एक ही तथ्य सूचित हो रहा है जो भावात्मक है, तो कठिनाई उपस्थित हो जाती है। हम कह सकते हैं कि कुछ ऐसा तथ्य है जो 'दिवाल उजली है' वाक्य को सत्य बनाता है, तथा वही तथ्य 'दिवाल हरी नहीं है' वाक्य को भी सत्य बनाता है। किन्तु, ऐसा कहने पर एक तार्किक कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। उस अवस्था में दोनों वाक्य एक ही तथ्य को सूचित करते हैं, अर्थात् दोनों एक ही अर्थ सूचित करते हैं। किन्तु तब वाक्य 'दिवाल हरी नहीं है' के अर्थ का अंग हो जाता है 'दिवाल उजली हैं'। किन्तु दिवाल के हरा नहीं

Scanned with CamScanner

होने का अर्थ उसका उजला होना नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि 'दिवाल हरी नहीं है' वाक्य से कुछ दूसरा अर्थ—कुछ दूसरा भिन्न तथ्य सूचित हो रहा है।

और यह दूसरा अर्थ—अथवा वह भिन्न तथ्य निषेधात्मक तथ्य है। इसे एक अन्य उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है। ऐसे वाक्यों को लें—'सुकरात जीवित नहीं है'। किस प्रकार के तथ्य से इस वाक्य की सत्यता-असत्यता तय होगी। स्पष्ट है, वह तथ्य भावात्मक हो ही नहीं सकता, क्योंकि कुछ भावात्मक ऐसा नहीं है जो सुकरात के जीवित नहीं होने को सत्य या असत्य बना दे। इसकी सत्यता-असत्यता अभावात्मक तथ्यों से ही निर्धारित हो सकती है। कोई कथन असत्य भी होगा तो किसी तथ्य के अनुरूप ही। अब यदि आप कोई उक्ति देते हैं जो असत्य है, तो बिना निषेधात्मक तथ्य के माने उसकी व्याख्या संभव नहीं है।

पुनः रसेल विशेष वस्तुओं, गुणों, संबंधों को सूचित करनेवाले तथ्य तथा पूर्णतया सामान्य तथ्य (Wholly general facts) में भी भेद करते हैं। पहले के अन्तर्गत किसी एक वस्तु के गुणों को सूचित करनेवाले तथ्य आ सकते हैं (जैसे मंज चौकोर है), तथा दो, तीन या उससे अधिक वस्तुओं के संबंध को सूचित करनेवाले तथ्य आ सकते हैं, (जैसे क ख का पिता हैं)। इसके विपरीत कुछ ऐसे तथ्य भी हो सकते हैं जो पूर्णतया सामान्य हैं, जिनकी सत्यता-असत्यता विशेष तथ्यों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि तार्किक तथ्यों पर निर्भर करती है। इस प्रकार के उदाहरण तार्किक अभिव्यक्तियाँ हैं। उदाहरणतः हम कहते हैं कि 'यदि एक वर्ग किसी दूसरे वर्ग का अंग है, तो इस वर्ग का सदस्य उस वर्ग का भी सदस्य होगा'। स्पष्ट है, यहाँ किसी **विशेष तथ्य** का, किसी **विशेष** वस्तु, गुण या संबंध का हवाला नहीं दिया जा रहा। इनसे मात्र तार्किक संबंध—वाक्यविन्यास (Syntax) का संबंध सूचित हो रहा है। अतः इन्हें तार्किक तथ्य कहा जा सकता है।

इनके अतिरिक्त रसेल एक अन्य प्रकार के तथ्य का भी उल्लेख करते हैं, जिसे वे **अभिप्रायमूलक तथ्य** (Intentional Fact) कहते हैं। उदाहरणतः इस वाक्य को लें 'क को विश्वास है कि उसकी पत्नी को किसी अन्य से प्रेम है'। इस वाक्य की सत्यता-असत्यता किस तथ्य से निर्धारित है। इस वाक्य में विशेष बात यह है कि इस वाक्य में दो उपवाक्य हैं, किन्तु **दूसरे** उपवाक्य के सत्य-असत्य होने से पूरे होने से पूरे वाक्य की सत्यता-असत्यता पर कोई अन्तर नहीं पड़ता। 'उसकी पत्नी को किसी अन्य से प्रेम है'—यह वाक्य सतय हो या असत्य, उससे इस पूरे वाक्य की सत्यता-असत्यता पर अंतर नहीं पड़ता। अर्थात् किसी विशेष बाह्य तथ्य से इस वाक्य की सत्यता-असत्यता निर्धारित नहीं होती, यह निर्धारित होती है अभिप्रायमूलक तथ्य (Intentional fact) से।

अणुतथ्य ***(Atomic Fact)***

रसेल के तार्किक अणुवाद के दर्शन में 'अणुतथ्य' बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह कोई भिन्न प्रकार का तथ्य नहीं, रसेल के अनुसार यह नाम सरलतम तथ्यों के लिए व्यवहृत हुआ है। सबसे सरल-अविभाज्य तथ्य, जिसे और छोटा नहीं किया जा सके, जिसके अंगों के विषय में सोचा भी नहीं जा सके, उनके लिए 'अणुतथ्य' नाम रखा गया है। इसे व्यक्त करने के लिए जिस कथन या उक्ति का उपयोग किया जाता है, वह सरल नहीं होता, उसके घटक एक या एक से अधिक हो सकते हैं। 'यह सफेद है', इसमें दो घटक हैं, एक वस्तु तथा उसका गुण। दो वस्तुओं के बीच में संबंध, जैसे क ख के दायें

Scanned with CamScanner

हैं, इसमें तीन घटक हैं, क, ख तथा संबंध। 'क ग के कारण घ से ईर्ष्या करता है'—इसमें चार घटक हैं—क, ग, घ तथा संबंध। रुचिकर बात यह है कि घटक यहाँ अनेक हैं, किन्तु जिस तथ्य को वे व्यक्त करते हैं, वह घटकों के बढ़ने से बढ़ता नहीं रहता, वह एक ही रहता है। इस प्रकार के सरल तथ्यों को घटकों के क्रम के अनुसार सोपानक्रमिक (Hierarchical) ढंग से व्यवस्थित किया जा सकता है। रसेल का कहना है कि यही व्यवस्था अणुतथ्यों का सोपानक्रम (hierarchy) कहा जा सकता है।

अणुतथ्यों में एक घटक तो ऐसा होता है जो गुण या संबंध दिखाता है—जिसे सामान्यतः क्रिया (Verb) या विधेय (Predicates) के द्वारा व्यक्त किया जाता है, तथा अन्य घटक दो, तीन, चार-अर्थात् **जितने घटकों के बीच संबंध है, उन्हीं घटकों को रसेल विशेष** (Particulars) कहते हैं। अतः अणुतथ्यों में कुछ विशेष रहते हैं, तथा कुछ गुण या सम्बन्ध, जिन्हें क्रिया (verb) या **विधेय** (Predicate) से व्यक्त किया जाता है। एक अणुतथ्य में **विशेष** अनेक हो सकते हैं, जितने घटकों के बीच संबंध दिखाया जाता है, उतने विशेष होंगे। अतः रसेल के अनुसार विशेष (Particulars) की परिभाषा है—'अणुतथ्य से संबंध में आने वाले घटक'।

स्पष्ट है—अणुतथ्य के विषय में कोई भाव बनाने के लिए उन प्रतिज्ञप्तियों—वाक्यों को जानना आवश्यक है जिनके द्वारा अणुतथ्यों को व्यक्त करने की चेष्टा होती है। अतः रसेल के प्रतिज्ञप्ति-विचार की विवेचना अनिवार्य है।

प्रतिज्ञप्ति तथा अणु प्रतिज्ञप्ति *(Proposition and Atomic Proposition)*

अपने तार्किक अणुवाद दर्शन के तार्किक पक्ष की पृष्ठभूमि तैयार करने में रसेल को प्रतिज्ञप्तियों पर विस्तार से विचार करना पड़ा है। इसका कारण स्पष्ट है। तथ्यों की जानकारी प्रतिज्ञप्तियों से ही होती है। इन प्रतिज्ञप्तियों का तथ्यों से दो प्रकार का संबंध होता है—एक सत्य होने का या असत्य होने का। तथ्य सत्य-असत्य नहीं होते, प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य-असत्य होती हैं। तथ्य तथ्य है—जो सत्य या असत्य दोनों वाक्यों को **तथ्यात्मक** बनाते हैं। 'वर्षा हो रही है', यदि यह सत्य है तो इसका यह अर्थ है कि 'यह तथ्य है कि वर्षा हो रही है', और यदि यह वाक्य असत्य है, तो उसका अर्थ है कि—'यह तथ्य है कि यह असत्य है कि वर्षा हो रही है।' **अतः** प्रतिज्ञप्तियों, वाक्यों का विश्लेषण इसलिए अनिवार्य हो जाता है कि यह पता लगे कि किस ढंग से वे तथ्य-निर्देश करते हैं।

प्रथमतः तो इतना कहा ही गया है कि प्रतिज्ञप्ति शब्दों की ऐसी व्यवस्था (System) है जो सत्य या असत्य हो सके। रसेल कहते हैं कि प्रतिज्ञप्ति एक निर्देशसूचक भाव का वाक्य है, जिसमें कुछ स्थापना की जाती है, कोई प्रश्न नहीं पूछे जाते, कुछ आदेश नहीं दिये जाते, कुछ इच्छा व्यक्त नहीं की जाती (A proposition is a sentence in the inlicative, a sentence asserting something, not questioning, or commanding or wishing)। अर्थात् प्रतिज्ञप्ति एक वाक्य तो है, किन्तु वह एक ऐसा वाक्य है जो सीधे-सीधे कुछ कहता है, कुछ प्रस्तावना करता है, कुछ स्थापना करता है। इसे निर्देशसूचक 'प्रस्तावना' के अर्थ में कहा गया है, आदेश के अर्थ में नहीं।

रसेल कहते हैं कि सभी प्रतिज्ञप्तियाँ 'प्रतीक' (Symbol) है। इन्हें वे जटिल प्रतीक (Complex Symbol) कहते हैं। प्रतीक जटिल तब होते हैं जब उनके अंग भी प्रतीक हों। तो प्रतिज्ञप्तियों के अंग (Parts) होते हैं, तथा वे भी प्रतीक हैं। प्रतीकों में कुछ अर्थ निहित

Scanned with CamScanner

रहता है। प्रतीक किसी वस्तु के चिह्न (sign) मात्र नहीं हैं। प्रतीक जिस रूप में दिखाई देता है, उससे कुछ अलग, कुछ भिन्न अर्थ को सूचित करता है। रसेल के विचार में 'प्रतीक' तथा 'जिसे प्रतीक सूचित करते हैं' इन दोनों के वास्तविक संबंध को जानना अनिवार्य है, अन्यथा एक प्रतीक से हम किसी गलत वस्तु को सूचित करने की भूल कर सकते हैं। पुनः यह भी स्मरण रखना हैं कि **प्रतीकों** का जो लक्षण है, उन लक्षणों को—जिस वस्तु को प्रतीक सूचित कर रहा है, उस पर लगाना ठीक नहीं हैं। रसेल के अनुसार ऊपर बताये दोनों प्रकार का व्यामिश्र 'अस्तित्व' (existence) 'सत्ता' (reality) आदि शब्दों के व्यवहार में प्रायः उत्पन्न होते हैं अतः एक वाक्य तथा उस वाक्य के अंश, जो दोनों प्रतीक हैं, उनके अपने-अपने लक्षण तथा उनसे सूचित होनेवाले लक्षणों का अवबोध अनिवार्य है। मूलतः कहा जाता है कि एक दृष्टि से वाक्य **जटिल प्रतीक** है, क्योंकि उसके अंग भी अपने में प्रतीक हैं, तथा उनकी जानकारी तथा वाक्यों की जानकारी एक ढंग से नहीं होती, बल्कि अलग-अलग ढंगों से होती है 'लाल' की जानकारी परिचय-ज्ञान से होती है, विवरण के द्वारा लाल की जानकारी उस रूप में नहीं हो सकती है। किन्तु, वाक्य 'गुलाब लाल है' की जानकारी 'गुलाब' तथा 'लाल' का क्या अर्थ है उस पर निर्भर करता है। 'लाल' की जानकारी के लिए **'लाल'** का परिचयात्मक ज्ञान होता है, किन्तु वाक्य 'गुलाब लाल है' को जानने के लिए इस वाक्य से पहले से परिचय होना आवश्यक नहीं। हम पहली बार भी इस वाक्य को सुनकर इसे जान सकते हैं, यदि प्रतीक 'गुलाब' तथा 'लाल' का अर्थ हम जानते हैं। इस बात का पूर्ण तात्पर्य बाद में स्पष्ट होगा जब हम 'तार्किक अणुवाद' के तार्किक पक्ष का स्पष्टीकरण करेंगे। एक तात्पर्य तो स्पष्ट है कि **'वाक्यों' तथा 'तथ्यों' में एक विशेष प्रकार का संबंध है जो 'शब्द' तथा तथ्य में नहीं।** वाक्य तथ्यों को नाम नहीं देते हैं, तथ्यों के संबंध में वे दो प्रकार का संबंध रखते हैं, सत्य होने का या असत्य होने का।

रसेल **अणुवाक्य** (Atomic Proposition) तथा **आण्विक वाक्य** (Molecular Proposition) में भेद करते हैं। अणुवाक्य वे वाक्य हैं जिनमें एक क्रिया (Verbs) हो। अणुवाक्य सरलतम वाक्य हैं, जिसमें एक विशेष गुण के साथ सूचित होता है या संबंध के साथ सूचित होता है। वैसे रसेल अणुवाक्य के उदाहरण देने में सदा एकरूप नहीं कर रहे हैं, कभी-कभी वे 'यह है', या केवल 'यह' का उदाहरण देते हैं। इस स्थल पर विटरोन्स्टीन का उल्लेख प्रासंगिक है। वे अणुवाक्य का उदाहरण नहीं देते। उनका कहना है कि अणुवाक्य की तार्किक अनिवार्यता है, अतः यदि हम उसका उदाहरण नहीं भी दे पाते, तो यह हमारी आसमर्थता या हमारी कमी है। किन्तु, इस असमर्थता से अणुवाक्य का होना खण्डित नहीं होता क्योंकि तार्किक माँगों के अनुरूप उनका होना अनिवार्य है। इसके विपरीत रसेल अणुवाक्य का उदाहरण देते हैं। अणुवाक्य सरलतम वाक्य हैं, इनसे जटिल वाक्य की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है। सरल वाक्य या तो मिश्रित हो सकते हैं या जटिल। आण्विक वाक्य (Molecular Proposition) मिश्रित इस अर्थ में हैं कि अणुवाक्य इनके अणु हैं। दो या दो से अधिक अणु-वाक्य जुट कर आण्विक वाक्य बनाते हैं। यह जुटना 'या (or), यदि (if), एवं या और (and) आदि' के द्वारा संभव होता है। उदाहरणतः कहते हैं कि 'राम परिश्रमी है और श्याम तेज है, 'यदि वर्षा होगी तो मैं छाता लेकर निकलूँगा' 'वर्षा हुई और मैं छाता लेकर निकला' आदि। इन सभी वाक्यों में कुछ अणुवाक्यों को 'और', 'यदि' आदि के द्वारा जोड़ा गया है।

Scanned with CamScanner

इसके विपरीत वाक्य जटिल दूसरे ढंग से भी होते हैं। जब हम एक ही वाक्य में एक से अधिक क्रियाओं (Verbs) का उपयोग करते हैं। उदाहरणतः, 'मुझे विश्वास है कि हमारी टीम जीतेगी। इस विश्वासमूलक या अभिप्रायमूलक प्रतिज्ञप्तियों में एक से अधिक क्रिया का उपयोग हुआ है। रसेल ने इस प्रकार के विश्वासमूलक वाक्यों का विश्लेषण किया है, तथा अस्तित्व (Existence) तथा सत्ता (Reality) संबंधी वाक्यों का भी विश्लेषण किया है।

किन्तु इस स्थल पर मूलतः हम अणुवाक्य तथा आण्विक वाक्य की ही विवेचना करेंगे क्योंकि हमारा उद्देश्य यह दिखाना है कि रसेल किस प्रकार अपने तार्किक अणुवाद-दर्शन में यह दिखाते हैं कि अणुवाक्यों से तथ्य-निर्देश होता है। वाक्य तथा नाम (Name) में यह अंतर है कि नाम तो किसी विशेष को सूचित करते हैं, किन्तु वाक्य तथ्य-निर्देश करते हैं। इस निर्देश का ढंग भी दो हैं। 'सुकरात मरणशील है', अब इसके अनुरूप या तो तथ्य यह है कि सुकरात मरणशील है या तथ्य यह है कि वह मरणशील नहीं है। पहली अवस्था में वाक्य सत्य होगा तथा दूसरी अवस्था में वाक्य असत्य होगा। किन्तु, जब हम आण्विक वाक्यों (Molecular Propositis) को देखें, तो बात कुछ दूसरे ढंग की होगी। हम कहते हैं 'राम या तो परिश्रमी है या वह मिहनती हैं' (pvq) अब यह वाक्य तो किसी एक तथ्य के अनुरूप सत्य या असत्य नहीं होगा, वैसा कोई वैकल्पिक तथ्य (Disjunctive fact) होता भी नहीं है। तो, रसेल का कहना है कि इस वाक्य की सत्यता-असत्यता इसके दोनों वाक्य 'p' तथा 'q' की सत्यता-असत्यता से निर्धारित होगी। अपने तर्क-दर्शन में रसेल ने इस प्रकार के और (and) या (or) यदि (if) आदि से जोड़े गये वाक्यों की सत्यता-सारिणी का उल्लेख किया है जिससे स्पष्ट होता है कि इन **आण्विक वाक्यों** का तथ्य-निर्देश इनमें व्यवहृत अणुवाक्यों (atomic-proposition) के तथ्य-निर्देश पर आधृत है। ऊपर के उदाहरण में 'pvq' वाक्य से जिस तथ्य का निर्देश हो रहा है, वह 'p' तथा 'q' दोनों वाक्यों की सत्यता-असत्यता से निर्धारित होता है। वह ढंग प्रारंभिक तर्कशास्त्र का प्रचलित ढंग है। अतः कहा जा सकता है कि आण्विक वाक्यों के तथ्य-निर्देश का आधार उनके अणुवाक्यों (Atomic Proposition) का तथ्य निर्देश है।

तार्किक अणुवाद का तार्किक पक्ष *(Logical Aspect of Logical Atomism)*

वैसे तो तार्किक अणुवाद के तार्किक पक्ष पर बहुत बातें हो चुकी हैं। कुछ तो उनके तार्किक एवं ज्ञानमीमांसीय उपकरणों के स्पष्टीकरण में ही स्पष्ट हुआ है, तथा कुछ स्पष्टीकरण उनके तथ्य एवं प्रतिज्ञप्ति-विवेचन में भी किया गया है किन्तु, यहाँ हमें उन विवेचनाओं को तार्किक अणुवाद-दर्शन के संदर्भ में बिठाना है।

हमने देखा है कि तार्किक अणुवाद दर्शन (Philosophy of Logical Atomism) का मूल लक्ष्य जगत् के मौलिक तत्त्वों की वस्तुसूचि (Inventory) बनानी है। उन तत्त्वों की जानकारी का एकमात्र एंग **'भाषा'** है, अतः भाषा संबंधी ऐसा स्पष्टीकरण अनिवार्य हो जाता है जिससे हम भाषा के उस रूप को पकड़ सकें जिससे तत्त्वों तथा तथ्यों की जानकारी होगी। यही कारण है कि इस दर्शन के तार्किक पक्ष में भाषा, भाषा की इकाई, प्रतिज्ञप्ति, अणुवाक्य, आण्विक वाक्य आदि की विवेचना अनिवार्य हो जाती है। किन्तु, हमारी सामान्य प्रचलित भाषा इतनी सरल नहीं होती कि उनसे तत्काल तत्त्वों या तथ्यों की जानकारी मिल जाय। अतः इस दर्शन के तार्किक पक्ष में यह बताना भी अनिवार्य हो जाता

Scanned with CamScanner

है कि भाषा के किस रूप से किस प्रकार की जानकारी होती है, तथा उससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह हो जाती है कि भाषा का वह रूप जो जगत् के संबंध में जानकारी देने का दावा करता है, वह वस्तुतः जानकारी देता है या नहीं? इसके लिए रसेल को दो काम करना पड़ता है—(1) एक तो वे यह विश्लेषण करते हैं कि कौन-सी भाषा से किस-किस प्रकार की जानकारी होती है, तथा (2) दूसरे वह यह भी दिखाते हैं कि सामान्य प्रचलित भाषा जो जगत् के विषय में जानकारी देने का दावा करती है, उसका वस्तुतः तार्किक विश्लेषण क्या है, **अर्थात्** क्या उस प्रकार के कथनों की जानकारी देने वाले कथनों में रूपान्तर किया जा सकता है और यदि किया जा सकता है तो उसका तार्किक ढंग क्या है? वस्तुतः इन्हीं दो बातों का स्पष्टीकरण इस खण्ड में अभीष्ट है—

(1) पहले हम पहली बात का स्पष्टीकरण करें। सामान्य रूप में यह तय किया जा चुका है कि जिस प्रकार की भाषायी इकाई (Unit of Language) से जगत् के संबंध में तात्कालिक जानकारी मिलती है, वे अणुवाक्य (Atomic Proportions) तथा आण्विक वाक्य (Molecular Propositions) हैं। आण्विक वाक्य अन्ततः अणु-वाक्यों से ही बने हैं। किन्तु, प्रश्न है कि इन वाक्यों से किस प्रकार जानकारी मिलती है? रसेल ने इस विषय पर दिये गये अपनी भाषण-माला के कई भाषणों में इसका स्पष्टीकरण किया है। हम यहाँ कुछ मूल बातों का ही उल्लेख कर पायेंगे—

(क) प्रथमतः तो हम इसी से प्रारम्भ कर सकते हैं कि प्रतिज्ञप्तियों को रसेल ने प्रतीक (symbol) माना है। प्रतीक का अर्थ है कि 'कुछ' से कुछ 'अन्य' का अर्थ सूचित होता है। वाक्य अपने से कुछ 'अन्य' का बोध कराता है। किन्तु, यदि जानकारी का आधार 'अर्थ' (meaning) है, तो अर्थ-संबंधी व्यामिश्र अथवा अनेकार्थता (ambiguity) का पूर्ण ध्यान रखना अनिवार्य है। वैसे रसेल यह स्वीकारते हैं कि 'अर्थ' शब्द के अर्थ में अन्ततः कुछ मनोवैज्ञानिकता का स्थान तो है ही जिसके चलते 'अर्थ' का पूर्णतया वस्तुनिष्ठ एवं तार्किक सिद्धांत नहीं दिया जा सकता। फिर भी, इस संबंध में वे कुछ मूल स्पष्टीकरण करते हैं। उदाहरणतः हम इस वाक्य को लें 'सुकरात मरणशील है'। यहाँ 'सुकरात' शब्द का अर्थ कोई मनुष्य है, 'मरणशील' शब्द का अर्थ कोई 'गुण' है, तथा 'सुकरात मरणशील है' वाक्य का अर्थ कोई तथ्य (fact) है। सुकरात तथा मरणशील शब्दों से तथ्य (fact) का बोध नहीं होता, पूरे वाक्य से होता है।

तो अब प्रश्न उठता है कि 'सुकरात' तथा 'मरणशील' से क्या बोध होता है। इतना तो स्पष्ट है कि इन दोनों से अलग-अलग किसी तथ्य का बोध नहीं होता, **तथ्य का बोध तो वाक्य से होता है।** 'सुकरात' जैसे शब्द को **सामान्यतः** नाम (Name) कहा जाता है, तथा 'मरणशील' जैसे शब्द को सामान्यतः विधेय (Predicate) कहा जाता है। किन्तु, दोनों से दो प्रकार का बोध होता है, एक ढंग का नहीं। **सामान्यतः** हम ऐसा समझते हैं कि नाम (Proper Name) से विशेषों (Particulars) का बोध होता है। किन्तु, रसेल कहते हैं कि साधारण नाम जैसे 'सुकरात' तार्किक अर्थ में 'नाम' है ही नहीं, वे तो सभी **विवरण** (Description) हैं। पहले बताया जा चुका है कि ऐसे नामों से प्रत्येक के मन में अलग-अलग विवरण उपस्थित होते हैं। अतः इन सामान्य नामों से विशेषों (Particulars) का बोध नहीं होता। विशेषों को सूचित कर सकते हैं **'तर्कतः उपयुक्त नाम'** (Logically Proper Name)। रसेल स्वीकारते हैं कि ऐसे नामों का उदाहरण देना बड़ा ही कठिन है, फिर भी वे **'यह'** (this) **'वह'** (that) का उदाहरण देते हैं, तथा कहते हैं कि यदि

Scanned with CamScanner

किसी विशेष (Particular) का साक्षात् परिचय किसी क्षण में होता है, तो उसे 'यह' (this) कहा जा सकता है। (विटगेन्स्टीन के समक्ष यह समस्या थी। उन्होंने **तर्कतः उपयुक्त नाम** का कोई उदाहरण नहीं दिया, फिर भी कहा कि तार्किक अनिवार्यता इनका होना सिद्ध करती है, अतः इन्हें स्वीकरना ही है, भले ही हम इनका उदाहरण न दे पायें)।

रसेल का कहना है कि विधेयों (Predicates) से गुण या संबंध का बोध होता है, किन्तु विधेय का अवबोध नाम के अवबोध से भिन्न है। नामों के समझने का जो मानसिक ढंग है, तथा विधेय को समझने में जो मानसिकता जागती है, वे एक दूसरे से भिन्न हैं। किसी नाम को समझने के लिए किसी विशेष का साक्षात् परिचय ज्ञान होना आवश्यक है तथा यह जानना भी कि उस नाम से वह विशेष सूचित हो सकता है। किन्तु, 'विधेय' को समझने के प्रयास में एक प्रकार से हम प्रतिज्ञप्ति बना कर समझते हैं। 'लाल' को समझने के लिए यह जानना पड़ता है कि 'x' को लाल कहने का क्या अर्थ होता है। विशेष को 'यह' (this) कहकर सूचित होता है कि 'यह लाल है' का क्या अर्थ हो सकता है। जब हम 'लाल' को समझते हैं, तो इसका अर्थ है कि हम यह समझते हैं कि 'x' लाल है' जैसी प्रतिज्ञप्ति का क्या अर्थ है।

(ख) रसेल इस बात को बार-बार स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार की भाषा से क्या जानकारी मिलती है—यह जानने के लिए यह स्मरण रखना नितान्त आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार के शब्दों क विभिन्न प्रकार के प्रयोग होते हैं तथा यह भी कि इन प्रयोगों में यदि मिलावट हो जाय, तो अनेक प्रकार की विसंगतियाँ, आत्मव्याघातकता आदि उत्पन्न हो जायेंगे। इसी बात को स्पष्ट करते हुए उन्होंने अपने प्रारूप सिद्धान्त (Theory of Types) का भी स्पष्टीकरण किया है। इसके लिए उन्होंने विभिन्न भाषणों में विभिन्न प्रकार के उदाहरणों को लेकर—जैसे **विश्वाससूचक कथन** (belief statements), सामान्य कथन (General Statements), **अस्तित्वसूचक कथन** (Existential statements) आदि—उनका विश्लेषण किया है तथा यह दिखाया है कि उनसे किस प्रकार की जानकारी मिल सकती है। सभी उदाहरणें का स्पष्टीकरण तो यहाँ पुस्तक की सीमा के कारण संभव नहीं है, हम एक उदाहरण लेंगे जो उनके **सामान्य वाक्य तथा अस्तित्व** के विश्लेषण से संबंधित है।

रसेल स्पष्ट कहते हैं कि **सामान्य प्रतिज्ञप्तियों** (General prososition) से यह नहीं समझना चाहिए कि वे अस्तित्वसूचक हैं। 'सभी ग्रीक मनुष्य हैं'—इस वाक्य में यह **नहीं** कहा जा रहा है कि **ग्रीक** है। उनका कहना है कि ऐसे वाक्यों में वस्तुतः एक **प्रतिज्ञप्ति फलन** (propositional function) के सभी मूल्यों की सत्यता का निर्देश हो रहा है। किसी ऐसी उक्ति को **प्रतिज्ञप्ति-फलन** Propositional function) कहा जा सकता है जिसमें एक या एक से अधिक ऐसे अनिर्धारित घटक (undetermined constituents) रहते हैं कि यदि उन्हें निर्धारित कर दिया जाय तो वह उक्ति प्रतिज्ञप्ति (Proposition) बन जाय। यदि हम कहें 'x मनुष्य है' तो यह प्रतिज्ञप्ति-फलन है, क्योंकि यदि इसके अनिर्धारित घटक 'x' को 'सुकरात' कह कर निर्धारित कर दें, तो 'सुकरात मनुष्य है' प्रतिज्ञप्ति बन जाता है। तो रसेल के अनुसार 'सभी मनुष्य मरणशील हैं' जैसे सामान्य कथनों में यह नहीं कहा जा रहा है कि 'मनुष्यों का अस्तित्व है', क्योंकि वह वस्तुतः एक प्रतिज्ञप्ति-फलन है 'यदि x मनुष्य है तो वह मरणशील है' जिसके सभी मूल्यों को सत्य माना जा रहा है।

रसेल कहते हैं कि प्रतिज्ञप्ति-फलन(Propositional Function) अनिवार्य (Necessary)

Scanned with CamScanner

होता है जब वह **सदा** सत्य हो, संभव (Possible) होता है जब वह कभी-कभी सत्य हो, तथा असंभव (Impossible) होता है जब वह सदा असत्य हो। विधि (Modality) की ये तीनों अवस्थाएँ प्रतिज्ञप्ति-फलन (Propositional function) के लक्षण हैं, प्रतिज्ञप्ति अथवा वाक्यों (Propositions or Sentences) के लक्षण नहीं। हम बहुधा इन्हें प्रतिज्ञप्तियों का लक्षण मान लेते हैं जिसके फलस्वरूप विसंगतियाँ उत्पन्न होती हैं क्योंकि प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य या असत्य ही होती हैं—अनिवार्य, संभव या असंभव नहीं होतीं।

इसी प्रकार की विसंगति अस्तित्वसूचक वाक्यों में उत्पन्न होती है, रसेल के अनुसार **अस्तित्व** (Existence) प्रतिज्ञप्ति या वाक्यों का लक्षण नहीं है, बल्कि **प्रतिज्ञप्ति-फलन** का लक्षण है। जब हम कहते हैं 'मनुष्य है' तो वस्तुतः हम कह रहे हैं कि प्रतिज्ञप्ति-फलन 'x'मनुष्य है' का कम-से-कम एक मूल्य सत्य है। अस्तित्व का सबसे मूल अर्थ यही है कि इसे सूचित करनेवाला प्रतिज्ञप्ति-फलन संभव (Possible) है, अर्थात् उसका कम-से-कम एक मूल्य ऐसा है जो सत्य है। यहाँ हम किसी विशेष मनुष्य को या किसी व्यक्ति को अस्तित्ववान् नहीं कह रहे हैं, हम यहाँ मात्र यही कह रहे हैं कि ''x मनुष्य है' संभव है''। अतः रसेल का कहना है कि सामान्य कथनों तथा जो अस्तित्व-सूचक कथन हो उन्हें देख यह नहीं सोचना चाहिए कि हमें वस्तुतः किसी अस्तित्व का ज्ञान हो रहा है। यह विसंगति होगी, तथा उन्होंने अपने तार्किक विश्लेषण से इस विसंगति को स्पष्ट किया है।

(2) जानकारी देने वाले कथन किस प्रकार की जानकारी देते हैं—इसका बड़ा ही संक्षिप्त स्पष्टीकरण कर लेने के बाद हम दूसरी समस्या का विश्लेषण करें। हमारी सामान्य भाषा के अनेकों कथन जानकारी देने का दावा करते हैं। यदि वे सचमुच जानकारी देते हैं, तो उनका रुपान्तरण जानकारी देनेवाली भाषा (अणुवाक्य एवं आण्विक वाक्यों वाली भाषा) में होना चाहिए। क्या रसेल इस दिशा में भी कुछ निर्देश देते हैं। अब इसका संक्षिप्त विवरण देंगे।

इसी स्थल पर रसेल की 'तार्किक संरचना-विधि' का महत्त्व स्पष्ट होता है। इसी स्थल पर 'प्रिंसिपिआ मैथेमेटिका' का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। रसेल कहते हैं कि इस प्रकार का रूपान्तरण किया जा सकता है। उदहारणतः उनके अनुसार भौतिक वस्तुओं के विषय में दिये गये कथनों को इन्द्रिय-प्रदत्त कथनों (Sense data Statements) में रूपान्तरित किया जा सकता है। उसी प्रकार अन्य मन (Other minds), सामान्य (universals) आदिर से संबंधित कथनों को ऐसे कथनों में रूपान्तरित किया जा सकता है जो अधिक निश्चित एवं स्पष्ट तत्त्वों के कथन हैं।

प्रश्न है कि इस प्रकार के रूपान्तरण की कोई विधि निश्चित की जा सकती है क्या? यह ठीक है कि इन सभी उदाहरणों से संबंधित कथनों का उदाहरण ले-लेकर रसेल ने विशद विश्लेषण तथा व्याख्या का प्रयत्न नहीं किया है, किन्तु उनका अभिप्राय स्पष्ट है। उनके अनुसार इस प्रकार का रूपान्तरण किया जा सकता है, उस रूपान्तरण की विधि की रुपरेखा उन्होंने अपने गणित-दर्शन में खींची है। उदाहरणतः अपने गणित-दर्शन में उन्होंने दिखाया है कि किस प्रकार संख्या-सिद्धान्त (Theory of Numbers), अपितु पूर्ण गणिती भाषा का रूपान्तरण तार्किक भाषा में किया जा सकता है। (इसका एक बहुत ही संक्षिप्त उल्लेख पहले किया जा चुका है)। तो उसी प्रकार की विधि से यहाँ भी रूपान्तरण का प्रयत्न किया जा सकता है।

इसके लिए दो आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ती है—एक तो उन तार्किक रूपों

Scanned with CamScanner

(Logical forms) को तय करना है जिनमें रूपान्तरण होगा तथा दूसरा यह देखना होगा कि विश्लेषण की प्रक्रिया में अन्ततः यह रूपान्तरण किस प्रकार के तत्त्वों में होगा—अर्थात् वे कैसे तत्त्व होंगे जिनमें रूपान्तरण होने से निश्चयता आयेगी तथा विसंगतियाँ न रहेंगी।

तार्किक रूपों को तय करने का प्रारंभिक कार्य तो रसेल ने अपने गणित-दर्शन में किया जिसमें उन्होंने एक निश्चित(Precise)भाषा की रूपरेखा खींची, जिस भाषा में अनिश्चयतां अथवा विसंगतियों का स्थान प्रायः नहीं के बराबर हो। उसी दृष्टि से कहा जा सकता हैं कि जो कथन विश्व की जानकारी देने का दावा करते हैं, उनके विश्लेषण से यह देखना होगा कि वे अणुवाक्य तथा आण्विक वाक्यों की भाषा में रूपांतरित हो सकते हैं या नहीं। **अणुवाक्य** से ही तथ्य-निर्देश होता है, यदि उस प्रकार के कथन अन्ततः अणुवाक्यों से ही बने हों, तो उनका तथ्य-निर्देश का दावा सही हो सकता है। विटरोन्स्टीन ने तो स्पष्ट कहा है कि ऐसे कथन उन अणुवाक्यों के सत्यता-फलन (Truth functions) है, अर्थात् इन वाक्यों की सत्यता-असत्यता उन अणुवाक्यों की सत्यता-असत्यता पर निर्भर करती है जिनसे ये संरचित है। रसेल ऐसा स्पष्ट नहीं कहते, किन्तु उनका तात्पर्य कुछ इस प्रकार का है क्योंकि उन्होंने भी ऐसे कथनों की सत्यता-असत्यता की जाँच के लिए; उनके अणुवाक्यों की सत्यता-असत्यता के आधार पर **सत्यतासारिणी** (Truth Tables) बनायी है। अतः तार्किक विश्लेषण का लक्ष्य यह देखना है कि ऐसे कथनों को अणुवाक्य एवं आण्विक वाक्य की भाषा में रूपांतरित किया जा सकता है या नहीं। इसी उद्देश्य से रसेल ने सामान्य-संबंधी कथन, विश्वास-संबंधी कथन(belief statements)सामान्य कथन(General Statements), अस्तित्व-सूचक कथन (existential statements)आदि का विश्लेषण किया है, तथा यह दिखाया है कि इनसे वस्तुतः किस प्रकार का निर्देश प्राप्त होता है। [सामान्य कथन तथा अस्तित्वसूचक कथन के विश्लेषण का उदाहरण ऊपर लिया जा चुका है।]

अब दूसरा प्रश्न रह गया । इस विश्लेषण में अन्ततः किसी ऐसे तत्त्व पर रूका जा सकता है जिसमें निश्चयता आ जाय। इस स्थल पर रसेल पूर्ण अनुभववादी हो जाते हैं। वे बार-बार कहते हैं कि **अज्ञात तत्त्वों के संबंध में दी गयी उक्ति को ज्ञात-तत्त्वों से संबंधित कथनों में रूपांतरित करना है**। अर्थात् जिस कथन को हम समझते हैं उसके रूपान्तरण में अन्ततः यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उस कथन की संरचना ऐसे घटकों से होनी चाहिए जिन घटकों का हमें साक्षात् परिचय-ज्ञान (acquaintance) है। यही तो आधार है उस कथन के निश्चयता का तथा उसके तथ्य-निर्देश के गुण का।

तार्किक अणुवाद का तात्त्विक पक्ष
(Metaphysical Aspect of Logical Atomism)

अपने 'तार्किक अणुवाद दर्शन' गये भाषण-क्रम में अन्तिम भाषण में रसेल ने इस दर्शन के तात्त्विक पक्ष (Metaphysical Side) को उजागर किया है। वे स्पष्ट कहते हैं कि अपने भाषणों में शुष्क तार्किक विवेचनाओं में उलझना उनके लिए अनिवार्य था, क्योंकि एक प्रकार से विवेचनाओं को तात्त्विक चिन्तन का **दार्शनिक व्याकरण** (Philosophical Grammar) कहा जा सकता है। पारम्परिक तत्त्वमीमांसीय निष्कर्षों में विसंगतियाँ इसी कारण आ जाती हैं, क्योंकि वे गलत व्याकरण पर आधृत हो जाते हैं। वाक्यों में उद्देश्य (Subject) तथा विधेय (Predicate) को परम मान लेने के फलस्वरूप ही तत्त्वमीमांसीय विचार या तो एकवादी या अनेकवादी हो जाते हें, जब कि दार्शनिक व्याकरण यह स्पष्ट

Scanned with CamScanner

दिखा देता है कि उद्देश्य-विधेय व्याकरण अयुक्त व्याकरण है। इसी कारण उन्होंनें विसंगतियों की संभावनाओं को स्पष्ट किया तथा उस आधार पर कुछ तात्त्विक निष्कर्ष स्थापित करने की चेष्टा की।

उनका मूल तात्त्विक निष्कर्ष **'अणुवाद'** है, यह प्रायः स्पष्ट ही है कि उनका **निष्कर्ष** है कि **कम-से-कम सिद्धान्त** (in theory) ऐसे सरल तत्त्वों की जानकारी हो सकती है, जिनसे जगत् संरचित है। ऐसे सरल तत्त्वों को **तात्त्विक तत्त्व** (metaphysical entities) कहा जा सकता है। 'तात्त्विक तत्त्व' से रसेल का तात्पर्य वैसे तत्त्वों से है, जो विश्व के परम अंश हैं—जिनसे विश्व संरचित है। ये **तात्त्विक** (metaphysical) इस कारण कहे जाते हैं, क्योंकि वे वैसे तत्त्वों में नहीं आते जिन्हें हम सामान्य अनुभव में जानते हैं। अतः तार्किक अणुवाद के तात्विक पक्ष को स्पष्ट करने में हमें दो बातों की विवेचना करनी हैं—(क) रसेल के अनुसार वे तात्विक तत्त्व क्या हैं जो जगत् की संरचना के परम इकाई हैं तथा (ख) सामान्य अनुभव में जिस प्रकार की वस्तुओं की जानकारी होती है, यदि वे तात्त्विक तत्त्व (Metaphysical entities) नहीं है, तो उनका स्वरूप क्या हैं। सामान्य अनुभव में हमें **भौतिक वस्तु** (Physical Object), व्यक्ति (Person) आदि की जानकारी होती है। इनका तात्त्विक स्वरूप क्या है?

(क) पहले हम पहली समस्या का विवेचन करें। रसेल के अनुसार ऐसे सरलतत्त्व (Simples) हैं जिनसे जगत् संरक्षित है। इन तत्त्वों की सत्ता अपने ढंग की है जो सामान्य अनुभव में ज्ञात तत्त्वों से भिन्न हैं। ऐसे तत्त्व **'अनेक'** ढंग के हैं। इनके अन्तर्गत **विशेष** (Particulars) **गुण** (Qualities), तथा **विभिन्न ढंगों** के **संबंध** (relations) आते हैं। इन सबको तत्त्व (entities) कहा जा सकता है। किन्तु, यदि हम जगत् के परम तत्त्वों की वस्तुसूचि बनायें, तो इतने ही से काम नहीं चलेगा। इनके अतिरिक्त एक और तत्त्व है जिसे रसेल **तथ्य** (facts) कहते हैं। हमें जगत् में तथ्य भी प्राप्त होते हैं। विशेष, गुण, संबंध आदि सरल तत्त्वों की जानकारी तथा तथ्यों की जानकारी एक ढंग से नहीं होती। विशेषों (Particulars) को तर्कतः उपयुक्त नामों (Logically Proper Names) से सूचित किया जा सकता है। गुण तथा संबंध विधेय (Predicates) से सूचित होते हैं, किन्तु **तथ्य** उस प्रकार सूचित नहीं होते। बिना तथ्यों को जाने विश्व की जानकारी नहीं हो सकती, किन्तु तथ्यों को नामों से सूचित नहीं किया जा सकता। हम तथ्यों को स्वीकार सकते हैं, इनका निषेध कर सकते हैं, किन्तु इनका नामकरण नहीं कर सकते। इनकी सत्यता-असत्यता का ज्ञान प्रतिज्ञप्तियों के द्वारा ही संभव है। इसी कारण रसेल कहते हैं कि अणुवाक्यों से तथ्यों का निर्देश होता है।

यह निर्देश किस प्रकार का है? अणुवाक्य किस प्रकार तथ्यों को सूचित करते हैं। रसेल के अनुसार इतना तो स्पष्ट है कि अणुवाक्य तथ्यों के नाम नहीं हैं। यदि वे नाम होते, तो एक वाक्य एक तथ्य का नाम होता; किन्तु हमने देखा है कि एक तथ्य के अनुरूप दो वाक्य होते हैं, एक वह जो उससे सत्य सिद्ध होता है; तथा दूसरा वह जो उससे असत्य सिद्ध होता है।

यह भी स्पष्ट है कि रसेल के अनुसार इन वाक्यों का अर्थ तथ्य नहीं है। हमने देखा है कि रसेल अर्थ शब्द के अर्थ में इतनी अनेकार्थकता एवं इतना व्यामिश्र देखते हैं कि तार्किक संरचना में वे अर्थ को मूल नहीं बना पाते। तो प्रश्न उठता है कि ये वाक्य किस प्रकार तथ्य-निर्देश करते हैं? विटरोन्स्टीने ने अपने 'ट्रैक्टटेस' में कहा है कि अणुवाक्य

Scanned with CamScanner

तथ्यों को चित्रित करते हैं (Picture facts)। रसेल यह नहीं कहते। फिर भी, उनके अनुसार इन वाक्यों एवं तथ्यों में ऐसी अनुरूपता है कि इन वाक्यों को जानने का अर्थ ही है तथ्यों को जानना। 'यह लाल है'—इस वाक्य को समझने का अर्थ ही है एक तथ्य की जानकारी।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रसेल के अनुसार विश्व जिन तत्त्वों से संरचित है उनकी वस्तुसूचि (Inventory) बनाने में मूलतः निम्नलिखित तत्त्व आते हैं—**विशेष** (Particulars), **गुण** (Quality), **संबंध** (reletion) तथा **तथ्य** (Facts)। विशेष तर्कतः उपयुक्त नाम (Logically Proper Names) से सूचित होते हैं, गुण, संबंध, विधेय तथा क्रिया (Verb) से सूचित होते हैं, तथा तथ्य प्रतिज्ञप्ति से सूचित होते हैं, जिनमें अणुवाक्य अणुतथ्यों (Atomic facts) का बोध कराते हैं।

(ख) हमने देखा है कि विश्व को संरचित करनेवाले तात्त्विक तत्त्व सामान्य अनुभव में ज्ञात तत्त्वों से भिन्न है। तो प्रश्न है कि सामान्य अनुभव में हमें जो ज्ञात होता है उसकी **तात्त्विकता** क्या है? उदाहरणतः सामान्य अनुभवों में हम भौतिक वस्तुओं को देखते हैं, व्यक्तियों (Persons) को जानते हैं। रसेल उनके तात्त्विक स्वरूप की व्याख्या कैसे करते हैं? रसेल के लिए यह बताना अनिवार्य हैं, क्योंकि उनके अनुसार विश्व को संरचित करनेवाले तत्त्वों की वस्तुसूचि में इस प्रकार के तत्त्व (भौतिक वस्तु या व्यक्ति) का उल्लेख नहीं होता। रसेल को इसकी अवगति है, तथा इसका भी विश्लेषण वे करते हैं।

पहले हम भौतिक वस्तु के विषय में विवेचना करें। हम एक 'मेज' देख रहे हैं, सामान्य अनुभव में हमें एक मेज का अनुभव हो रहा है, क्या यह अनुभव किसी तात्त्विक सत्ता (metaphysical entity) अथवा द्रव्य (substance) का अनुभव हैं? रसेल कहते हैं कि अनुभव में तो ऐसा कोई तत्त्व ज्ञात नहीं होता। तब यह प्रश्न उठता है कि हम यह कैसे जानते हैं कि यह वही मेज है जिसे हमने कल देखा था—परसों भी देखा था। रसेल कहते हैं कि हमें अनुभव से किसी प्रकार यह ज्ञात नहीं होता कि मेज के परसों-कल तथा आज के अनुभव में कोई तादात्म्य (Identity) है। ऐसा कोई तादात्म्य अथवा एकरूपता अनुभव में ज्ञात नहीं होता। अनुभव में मात्र इतना ही ज्ञात होता है कि ये सभी अनुभव भिन्न-भिन्न प्रतीति है जो एक-साथ है। ये प्रतीतियाँ भिन्न-भिन्न हैं, समान प्रतीत होती हैं, इन्हीं **समान प्रतीत होने वाले भिन्न-भिन्न प्रतीतियों का क्रम यह मेज है। मेज प्रतीतियों का क्रम हैं** (Series of appearances)। रसेल के अनुसार क्रम (Series) तार्किक मनःसृष्टि (Logical Fiction) होता है, अतः भौतिक वस्तु प्रतीतियों के क्रम होने के कारण तार्किक मनःसृष्टि (Logical Fiction) सिद्ध होता है। विचारणीय बात यह है कि रसेल **भौतिक वस्तुओं की सत्ता का निषेध नहीं कर रहे हैं, उनका मात्र इतना ही कहना है कि इसकी तात्त्विक सत्ता को स्वीकारा नहीं जा सकता।**

वैसे भौतिकी में भौतिक वस्तुओं के आधार के रूप में कुछ प्राथमिक अणुतत्त्वों (atoms electrons] protons) आदि की बात होती है। किन्तु, रसेल के अनुसार ये सब भी भौतिक तत्त्व ही हैं, क्योंकि भौतिकी इनकी खोज भी भौतिक विश्लेषण (Physical Analysis) के आधार पर करता है। रसेल के तात्त्विक तत्त्वों (Metaphysical entities) के अन्तर्गत ये भौतिकी तत्त्व नहीं आ सकते ,क्योंकि तात्त्विक तत्त्व तार्किक विश्लेषण (Logical analysis) से प्राप्त होते हैं, वे ऐसे तत्त्व हैं जिन्हें तर्कतः नकारा नहीं जा सकता। अतः भौतिकी अणु-तत्त्व भी विश्व को संचरित करनेवाले तात्त्विक

Scanned with CamScanner

अणुतत्त्वों के अन्तर्गत नहीं आते। उनका विश्लेषण भी नहीं है जो भौतिक पदार्थों का विश्लेषण है, उन्हें भी तार्किक मनःसृष्टि (Logical Fiction) कहा जा सकता है।

रसेल का व्यक्ति(Persons)संबंधी विश्लेषण भी कुछ इसी प्रकार का है। उदाहरणतः हमें दूर से आता हुआ एक व्यक्ति दिखाई देता है और हम कहते हैं—'अरे, यह तो मेरा मित्र जेम्स है'। हमने कैसे जाना कि यह जेम्स है। हम यह नहीं कह सकते हैं कि जेम्स में कोई ऐसी तात्त्विक सत्ता है जिसके कारण हमने जेम्स को पहचाना, क्योंकि किसी ऐसी तात्त्विक सत्ता का अनुभव हमें नहीं होता। हमें अनुभव होता है विभिन्न क्षणों में जेम्स की प्रस्तुति का, हमें अनुभव होता है जेम्स से संबंधित अन्य क्षणों का, तथा हम जिसे जेम्स पहचानते हैं, वह **इन सभी अनुभवों का क्रम है।** इस क्रम को जेम्स नाम देने का यह अर्थ नहीं कि हमने इस नाम से सूचित होनेवाली किसी तात्त्विक सत्ता का अनुभव किया है जिसे हम व्यक्ति(Person)कहते हैं, वे हमारे विभिन्न अनुभवों का क्रम है(Series of experiences), अतः तर्कतः वह भी एक मनःसृष्टि (Logical Fiction) है। स्मरण रखना है कि रसेल किसी आत्म (ego) जैसे तत्त्व का निषेध नहीं कर रहे, उसे स्वीकार नहीं रहे हैं, क्योंकि अनुभव में किसी ऐसी तात्त्विक सत्ता का ज्ञान उपलब्ध नहीं होता।

अतः कहा जा सकता है विश्व को संरचित करनेवाले तात्त्विक तत्त्वों (Metaphysical entities) के अंतर्गत भौतिक वस्तु, व्यक्ति अथवा भौतिक के अणुतत्त्व नहीं आते।

❑

Scanned with CamScanner